# आख़िरी फ़ौजी मुहिम

रूमी साम्राज्य की सत्ता को गवारा न था कि वह इस्लाम और मुसलमानों के ज़िंदा रहने का हक़ मान ले, इसीलिए उसके साम्राज्य में रहने वाला कोई व्यक्ति इस्लाम की गोद में आ जाता, तो उसकी जान की ख़ैर न रहती जैसा कि मआन के रूमी गवर्नर हज़रत फ़रवा बिन अम्र जज़ामी के बाद पेश आ चुका था।

इस जुर्रत और घमंड की रोशनी में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सफ़र 11 हि० में एक बड़ी फ़ौज की तैयारी शुरू फ़रमाई और हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को इसका कमांडर मुक़र्रर फ़रमाते हुए हुक्म दिया कि बलक़ा का इलाक़ा और दारुम की फ़लस्तीनी धरती सवारों के ज़रिए रौंद आओ।

इस कार्रवाई का मक़सद यह था कि रूमियों को भयभीत करते हुए उनकी सीमाओं पर स्थित अरब क़बीलों का विश्वास बहाल किया जाए और किसी को यह सोचने की गुंजाइश न दी जाए कि कलीसा की हिंसा पर कोई पूछने वाला नहीं और इस्लाम क़ुबूल करने का मतलब सिर्फ़ यह है कि अपनी मौत को दावत दी जा रही है।

इस मौक़े पर कुछ लोगों ने कमांडर की नवउम्री को आलोचना का निशाना बनाया और इस मुहिम के अन्दर शामिल होने में विलम्ब किया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुम लोग उनकी कमांडरी पर ताने दे रहे हो, तो इनसे पहले इनके बाप की कमांडरी पर ताने दे चुके हो, हालांकि वह ख़ुदा की क़सम! कमांडरी की योग्यता रखते थे और मेरे नजदीक सबसे प्रिय लोगों में से थे और यह भी उनके बाद मेरे नज़दीक सबसे प्रिय लोगों में से हैं।[1]

बहरहाल सहाबा किराम हज़रत उसामा के चारों ओर जमा होकर उनकी फ़ौज में शामिल हो गए और फ़ौज रवाना होकर मदीना से तीन मील दूर जर्फ़ नामी जगह पर पड़ाव के लिए ठहर गई, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० की बीमारी की चिन्ताजनक ख़बरों की वजह से आगे न बढ़ सकी, बल्कि अल्लाह के फ़ैसले के इन्तिज़ार में वहीं ठहरने पर मजबूर हो गई और अल्लाह का फ़ैसला यह था कि यह फ़ौज हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िदमत के दौर की पहली फ़ौजी मुहिम क़रार पाए।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब बअसन्नबीयु सल्ल० उसामा 2/612
2. वही, सहीह बुख़ारी : इब्ने हिशाम 2/606, 10

# पवित्र जीवनी का अन्तिम अध्याय

# रफ़ीक़े आला की ओर

## विदाई की निशानियां

जब दीन की दावत पूरी हो गई और अरब की नकेल इस्लाम के हाथ में आ गई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० की भावनाओं, बातों और परिस्थितियों आदि से ऐसी निशानियां ज़ाहिर होनी शुरू हो गईं जिनसे मालूम होता था कि अब आप इस ज़िंदगी और यहां के लोगों को अलविदा कहने वाले हैं, जैसे—

आपने रमज़ान सन् 10 हि० में बीस दिन एतकाफ़ फ़रमाया, जबकि हमेशा दस दिन ही एतकाफ़ फ़रमाया करते थे, फिर हज़रत जिब्रील ने आपको उस साल दो बार कुरआन का दौर कराया, जबकि हर साल एक ही बार दौर कराया करते थे। आपने विदाई हज में इर्शाद फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं, शायद मैं इस साल के बाद अपनी इस जगह पर तुम लोगों से कभी न मिल सकूंगा। जमरा अक़बा के पास फ़रमाया, मुझसे अपने हज के अमल सीख लो, क्योंकि मैं इस साल के बाद शायद हज न कर सकूंगा। आप पर तशरीक़ के दिनों में सूरः अस्र उतरी और इससे आपने समझ लिया कि अब दुनिया से रवानगी का वक़्त आ पहुंचा है और यह मौत की सूचना है।

सफ़र सन् 11 हि० के शुरू में आप उहुद की तलेटी में तशरीफ़ ले गए और शहीदों के लिए इस तरह दुआ फ़रमाई, मानो ज़िंदों और मुर्दों से विदा हो रहे हैं, फिर वापस आकर मिंबर पर बैठे और फ़रमाया, मैं तुम्हारा मीरे कारवां हूं और तुम पर गवाह हूं। ख़ुदा की क़सम ! मैं इस वक़्त अपना हौज़ (हौज़ कौसर) देख रहा हूं। मुझे ज़मीन और ज़मीन की कुंजियां दी गई हैं औ ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह डर नहीं है कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, बल्कि डर इसका है कि दुनिया के बारे में तनाफ़ुस करोगे।[1] (उसमें चाव पैदा करने लगोगे।

एक दिन आधी रात को आप बक़ीअ तशरीफ़ ले गए और बक़ीअ वालों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ की, फ़रमाया, ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम ! लोग जिस हाल में हैं, उसके मुक़ाबले में तुम्हें वह हाल मुबारक हो जिसमें तुम हो। फ़िले अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह एक के पीछे एक चले आ रहे हैं और बाद वाला पहले वाले से ज़्यादा बुरा है। इसके बाद क़ब्र वालों को यह कहकर ख़ुशख़बरी

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम, सहीह बुख़ारी 2/585, फ़त्हुल बारी 3/248, हदीस न० 344, 3596, 4042, 4085, 6426, 6590

दी कि हम भी तुमसे आ मिलने वाले हैं।

## मरज़ की शुरुआत

29 सफ़र सन् 11 हि० सोमवार को अल्लाह के रसूल सल्ल० एक जनाज़े में वक़ीअ तशरीफ़ ले गए। वापसी पर रास्ते ही में सर दर्द शुरू हो गया और बुख़ार इतना तेज़ हो गया कि सर पर बंधी हुई पट्टी के ऊपर से महसूस होने लगा। यह आपके मृत्युरोग की शुरुआत थी। आपने इस हाल में ग्यारह दिन नमाज़ पढ़ाई। मरज़ की कुल मुद्दत 13 या 14 दिन थी।

## अन्तिम सप्ताह

अल्लाह के रसूल सल्ल० की तबियत हर दिन बोझल होती जा रही थी। इस बीच आप अपनी बीवियों से पूछते रहते थे कि मैं कल कहां रहूंगा? मैं कल कहां रहूंगा?

इस सवाल से आप जो फ़रमाना चाहते थे, प्यारी बीवियां उसे समझ गईं। चुनांचे उन्होंने इजाज़त दे दी कि आप जहां चाहें, रहें। इसके बाद आप हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में चले गए। जाते वक़्त हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास और अली बिन अबी तालिब रज़ि० के बीच टेक लगाकर चल रहे थे। सर पर पट्टी बंधी थी और पांव ज़मीन पर घसिट रहे थे। इस दशा में आप हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में तशरीफ़ लाए और फिर मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी सप्ताह वहीं गुज़ारा।

हज़रत आइशा रज़ि० 'मुअव्विज़ात' और अल्लाह के रसूल सल्ल० से याद की हुई दुआएं पढ़कर आप पर दम करती रहती थीं और बरकत की उम्मीद में आपका हाथ आपके मुबारक जिस्म पर फेरती रहती थीं।

## मृत्यु से पांच दिन पहले

मृत्यु से पांच दिन पहले बुधवार को बुख़ार में तेज़ी आ गई, जिसकी वजह से तक्लीफ़ भी बढ़ गई और ग़शी छा गई। आपने फ़रमाया, मुझ पर अलग-अलग कुंवों के सात मशक पानी बहाओ, ताकि मैं लोगों के पास जाकर वसीयत कर सकूं। इस पर अमल करने के लिए अपको एक लगन में बिठा दिया और आपके ऊपर इतना पानी डाला गया कि आप 'बस-बस' कहने लगे।

उस वक़्त कुछ आपने हल्कापन महसूस किया और मस्जिद में तशरीफ़ ले गए—सर पर मटियाली पट्टी बंधी हुई थी, मिंबर पर आए और बैठकर ख़ुत्बा दिया। यह आख़िरी बैठक थी, जो आप बैठे थे। आपने अल्लाह की हम्द व सना

(गुण-गान) की, फिर फ़रमाया, लोगो ! मेरे पास आ जाओ। लोग आपके क़रीब आ गए, फिर आपने फ़रमाया, उसमें यह फ़रमाया, यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत—कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।[1]

आपने यह भी फ़रमाया, 'तुम लोग मेरी क़ब्र को बुत न बनाना कि उसकी पूजी की जाए।'[2]

फिर आपने अपने आपको क़सास (बदला लेना) के लिए पेश किया और फ़रमाया, 'मैंने किसी की पीठ पर कोड़ा मारा हो, तो यह मेरी पीठ हाज़िर है। वह बदला ले ले और अगर किसी की आबरू पर चोट की हो, तो मैं हाज़िर हूं, बदला ले ले।'

इसके बाद आप मिंबर से नीचे तशरीफ़ लाए। ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, फिर मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और दुश्मनी वग़ैरह से मुताल्लिक़ अपनी पिछली बातें दोहराई। एक व्यक्ति ने कहा, आपके ज़िम्मे मेरे तीन दिरहम बाक़ी हैं। आपने फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० से फ़रमाया, इन्हें अदा कर दो। इसके बाद अंसार के बारे में वसीयत फ़रमाई, फ़रमाया—

'मैं तुम्हें अंसार के बारे में वसीयत करता हूं, क्योंकि वे मरे दिल व जिगर हैं। उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी, पर उनके हक़ बाक़ी रह गए हैं, इसलिए उनके नेकों से क़ुबूल करना और उनके बदकार से दरगुज़र करना।'

एक रिवायत में है कि आपने फ़रमाया, 'लोग बढ़ते जाएंगे और अंसार घटते जाएंगे, यहां तक कि खाने में नमक की तरह हो जाएंगे, इस तरह तुम्हारा जो आदमी किसी नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने वाले काम का ज़िम्मेदार हो तो वह उनके नेकों से क़ुबूल करे और उनके बुरों को माफ़ कराए।[3]

इसके बाद आपने फ़रमाया, एक बन्दे को अल्लाह ने अख़्तियार दिया कि वह या तो दुनिया की चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में से जो कुछ चाहे अल्लाह उसे दे दे या अल्लाह के पास जो कुछ है उसे अपना ले तो उससे बन्दे ने अल्लाह के पास वाली चीज़ को अख़्तियार कर लिया।'

अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० का बयान है कि यह बात सुनकर अबूबक्र रज़ि० रोने लगे और फ़रमाया, हम अपने मां-बाप समेत आप पर क़ुर्बान। इस पर हमें ताज्जुब हुआ। लोगों ने कहा, इस बूढ़े को देखो। अल्लाह के रसूल सल्ल० तो

---

1. सहीह बुख़ारी 1/62, मुअत्ता इमाम मालिक, पृ० 160
2. मुअत्ता इमाम मालिक, पृ० 65
3. सहीह बुख़ारी 1/536

एक बन्दे के बारे में यह बता रहे हैं कि अल्लाह ने उसे अख़्तियार दिया कि दुनिया की चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में से जो चाहे अल्लाह उसे दे दे या वह अल्लाह के पास जो कुछ है उसे अख़्तियार कर ले और यह बूढ़ा कह रहा है कि हम अपने मां-बाप के साथ आप पर क़ुरबान। (लेकिन कुछ दिनों बाद स्पष्ट हुआ कि) जिस बन्दे को अख़्तियार दिया गया था, वह ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल० थे और अबूबक्र रज़ि० हममें सबसे ज़्यादा ज्ञान वाले थे।[1]

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मुझ पर अपने साथ और माल में सबसे ज़्यादा एहसान वाले अबूबक्र हैं और अगर मैं अपने रब के अलावा किसी और को प्रिय बनाता तो अबूबक्र को प्रिय बनाता। लेकिन (उनके साथ) उनका भाईचारा और मुहब्बत (का ताल्लुक़) है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा बाक़ी न छोड़ा जाए, बल्कि उसे ज़रूर ही बन्द कर दिया जाए, सिवाए अबूबक्र के दरवाज़े के।[2]

## चार दिन पहले

मृत्यु से चार दिन पहले जुमा रात को जबकि आप सख़्त तक्लीफ़ से दोचार थे, फ़रमाया, लाओ, मैं तुम्हें एक काग़ज़ लिख दूं जिसके बाद तुम लोग कभी गुमराह न होगे। उस वक़्त घर में कई आदमी थे, जिनमें हज़रत उमर रज़ि० भी थे, उन्होंने कहा, 'आप पर तक्लीफ़ का ग़लबा है और तुम्हारे पास क़ुरआन है, बस अल्लाह की यह किताब तुम्हारे लिए काफ़ी है, इस पर घर के अन्दर मौजूद लोगों में मतभेद हो गया और वे झगड़ पड़े। कोई कह रहा था, लाओ, अल्लाह के रसूल सल्ल० लिख दें और कोई वही कह रहा था, जो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा था। इस तरह लोगों ने जब ज़्यादा शोर किया और मतभेद बढ़ा तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे पास से उठ जाओ।[3]

फिर उसी दिन आपने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई—

एक इस बात की वसीयत कि यहूदी और ईसाई और मुश्रिकों को अरब प्रायद्वीप से निकाल देना,

दूसरे इस बात की वसीयत कि प्रतिनिधिमंडलों का सत्कार उसी तरह करना जिस तरह आप किया करते।

अलबत्ता तीसरी बात को रिवायत करने वाला भूल गया, शायद यह किताब व सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रहने की वसीयत थी या उसामा की फ़ौज को

1. बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात 2/546, 554,
2. वही, सहीह बुख़ारी 1/516
3. बुख़ारी व मुस्लिम, 1/22, 429, 449, 2/638

अमलीजामा पहनाने की वसीयत थी, या आपका यह इर्शाद था कि 'नमाज़ और तुम्हारे आधीन' यानी ग़ुलामों और लौंडियों का ख़्याल रखना।

अल्लाह के रसूल सल्ल० मरज़ की तेज़ी के बावजूद उस दिन तक यानी वफ़ात से चार दिन पहले (जुमा रात) तक तमाम नमाज़ें ख़ुद ही पढ़ाया करते थे। उस दिन भी मग़्रिब की नमाज़ आप ही ने पढ़ाई और उसमें सूरः मुर्सलात पढ़ी।[1]

लेकिन इशा के वक़्त मरज़ का बोझ इतना बढ़ गया कि मस्जिद में जाने की ताक़त न रही, हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि नबी सल्ल० ने मालूम किया कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली?

हमने कहा, नहीं, अल्लाह के रसूल! और वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं।

आपने फ़रमाया, मेरे लिए लगन में पानी रखो। हमने ऐसा ही किया। आपने ग़ुस्ल फ़रमाया, और उसके बाद उठना चाहा, लेकिन आप पर ग़शी छा गई। फिर दूर हुई तो आपने मालूम किया, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली?

हमने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। इसके बाद दोबारा, और फिर तीसरी बार वही बात पेश आई जो पहली बार पेश आ चुकी थी। आपने ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर उठना चाहा, तो आप पर ग़शी छा गई। आख़िर में आपने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को कहलवा भेजा कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन दिनों में नमाज़ पढ़ाई।[2] नबी सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी में उनकी पढ़ाई हुई नमाज़ों की तायदाद सत्तरह है। जुमेरात की इशा, सोमवार की फ़ज्र और बीच के तीन दिनों की पन्द्रह नमाज़ें।[3]

हज़रत आइशा रज़ि० ने नबी से तीन बार या चार बार रुजू फ़रमाया कि इमामत का काम हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बजाए किसी और को सौंप दे। उनका मंशा यह था कि लोग अबूबक्र रज़ि० के बारे में बदशगून न हों[4], लेकिन नबी सल्ल० ने हर बार इंकार कर दिया और फ़रमाया, तुम सब यूसुफ़ वालियां हो।[5]

---

1. सहीह बुख़ारी अन उम्मुल फ़ज़्ल, बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० 2/637
2. बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात 2/102
3. बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 2/193 हदीस न० 681, मुस्लिम किताबुस्सलात 1/315, हदीस न० 100, मुस्नद अहमद 6/229
4. इसके लिए देखिए बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 7/747, हदीस न० 4445, मुस्लिम किताबुस्सलात 1/31, हदीस न० 93, 94,
5. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सिलसिले में जो औरतें अज़ीज़ मिस्र की बीवी की

अबूबक्र रज़ि० को हुक्म दो, वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं ।[1]

## तीन दिन पहले

हज़रत जाबिर का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसपूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वफ़ात से तीन दिन पहले सुना, आप फ़रमा रहे थे, याद रखो, तुममें से किसी को मौत नहीं आनी चाहिए, मगर इस हालत में कि वह अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखता हो ।[2]

## एक दिन या दो दिन पहले

सनीचर या इतवार को नबी सल्ल० ने अपनी तबियत में कुछ सुधार महसूस किया, चुनांचे दो आदमियों के बीच चलकर ज़ुहर की नमाज़ में तशरीफ़ ले आए, उस वक़्त अबूबक्र रज़ि० सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ा रहे थे। वह आपको देखकर पीछे हटने लगे। आपने इशारा किया कि पीछे न हटें और लाने वालों से फ़रमाया कि मुझे उनके बाज़ू में बिठा दो।

चुनांचे आपको अबूबक्र रज़ि० के बाईं बिठा दिया गया। इसके बाद अबूबक्र रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० की नमाज़ की पैरवी करते जा रहे थे और सहाबा किराम को तक्बीर सुना रहे थे ।[3]

---

मलामत कर रही थीं, वे देखने में तो उसकी हरकत के घटियापन को ज़ाहिर कर रही थीं, लेकिन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर जब उन्होंने अपनी उंगलियां काट लीं तो मालूम हुआ कि वे ख़ुद भी अप्रत्यक्ष रूप से उन पर पूरी तरह मोहित हैं, यानी वे ज़ुबान से कुछ कह रही थीं, लेकिन उनके दिल में कुछ और ही बात थी। यही मामला यहां भी था। ज़ाहिरी तौर पर रसूलुल्लाह सल्ल० से कहा जा रहा था कि अबूबक्र दिल के नर्म हैं आपकी जगह खड़े होंगे तो रोने की वजह से क़ुरआन पढ़ न सकेंगे या सुना न सकेंगे, लेकिन दिल में यह बात थी कि अगर अल्लाह के रसूल सल्ल० वफ़ात पा गए तो अबूबक्र के बारे में नहूसत और बदशगूनी का ख़्याल लोगों के दिलों में जड़ पकड़ लेगा। चूंकि हज़रत आइशा रज़ि० की इस गुज़ारिश में दूसरी बीवियां भी शरीक थीं इसलिए आपने फ़रमाया, तुम सब यूसुफ़ वालियां हो, यानी तुम्हारे भी दिल में कुछ और है और ज़ुबान से कुछ और कह रही हो।

1. सहीह बुख़ारी, 1/99
2. तबक़ाते इब्ने साद 2/255, मुस्नद अबी दाऊद तयालसी, पृ० 246, पृ० 246, हदीस न० 1779, मुस्नद अबी याला 4/193, हदीस न० 2290
3. सहीह बुख़ारी, 1/98, 99, मय फ़त्हुल बारी 2/195, 238, 239, हदीस न० 683, 712, 713

## एक दिन पहले

मृत्यु के एक दिन पहले यानी इतवार को नबी सल्ल० ने अपने तमाम गुलामों को आज़ाद फ़रमा दिया। पास में छः या सात दीनार थे, उन्हें सदक़ा कर दिया[1], अपने हथियार मुसलमानों को भेंट कर दिए। रात में चिराग़ जलाने के लिए हज़रत आइशा रज़ि० ने चिराग़ पड़ोसिन के पास भेजा कि उसमें अपनी कुप्पी से ज़रा सा घी टपका दो।[2] आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास तीस साअ (कोई 75 किलो) जौ के बदले रेहन रखी हुई थी।[3]

## मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी दिन

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि सोमवार को लोग फ़ज्र की नमाज़ में लगे हुए थे और अबूबक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ा रहे थे कि अचानक अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे का परदा उठाया और सहाबा किराम पर जो सफ़ें बांधे नमाज़ें पढ़ रहे थे, नज़र डाली, फिर मुस्कराए।

इधर अबूबक्र रज़ि० एड़ी के बल पीछे हटे कि सफ़ में जा मिलें। उन्होंने समझा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाना चाहते हैं।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल (के इस अचानक ज़ाहिर होने से) मुसलमान इतने ख़ुश हुए कि चाहते थे कि नमाज़ के अन्दर ही फ़ित्ने में पड़ जाएं (यानी आपकी तबियत जानने के लिए नमाज़ तोड़ दें) लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने हाथ से इशारा फ़रमाया कि अपनी नमाज़ पूरी कर लो, फिर हुजरे के अन्दर तशरीफ़ ले गए और परदा गिरा लिया।[4]

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० पर किसी दूसरी नमाज़ का वक़्त नहीं आया।

---

1. तबक़ाते इब्ने साद 2/237, कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि यह कदम आपने सोमवार की रात या सोमवार के दिन यानी हयाते तैयिबा के आख़िरी दिन फ़रमाया था।
2. तबक़ाते इब्ने साद 3/239
3. देखिए सहीह बुख़ारी हदीस न० 2068, 2096, 2200, 2251, 2252, 2386, 2509, 2513, 2916, 4167, मुग़ाज़ी के अन्त में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई और आपकी ज़िरह (कवच) रेहन रखी हुई थी। मुस्नद अहमद में है कि आपको इतना न मिल सका कि इस ज़िरह को छुडा सकें।
4. वही, बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० 2/240, मय फ़त्हुल बारी 2/193 हदीस न० 680, 681, 754, 1205, 4448

दिन चढ़े चाश्त के वक़्त आपने अपनी साइबज़ादी हज़रत फ़ातमा रज़ि० को बुलाया और उनसे कुछ कान में कहा। वह रोने लगीं। आपने उन्हें फिर बुलाया और कुछ कान में कहा, तो वह हंसने लगीं।

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि बाद में हमारे मालूम करने पर उन्होंने बताया कि (पहली बार) नबी सल्ल० ने मुझसे कान में बताया कि आप इसी रोग में वफ़ात पा जाएंगे, इसलिए मैं रोई। फिर आपने मुझसे कान में कहा कि आपके घरवालों में सबसे पहले मैं आपके पीछे जाऊंगी, इस पर मैं हंसी।[1]

नबी सल्ल० ने हज़रत फ़ातमा को यह ख़ुशख़बरी भी दी कि आप दुनिया की तमाम औरतों की सरदार हैं।[2]

उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० जिस बेचैनी और दर्द के शिकार थे, उसे देखकर हज़रत फ़ातिमा बेअख़्तियार पुकार उठीं, 'हाय अब्बा जान की तक्लीफ़ !'

आपने फ़रमाया, तुम्हारे अब्बा पर आज के बाद कोई तक्लीफ़ नहीं।[3]

आपने हसन व हुसैन को बुलाकर चूमा और उनके बारे में भलाई की वसीयत की। बीवियों को बुलाया और उन्हें वाज़ व नसीहत की।

इधर हर क्षण तक्लीफ़ बढ़ती जा रही थी और उस ज़हर का असर भी ज़ाहिर होना शुरू हो गया था, जिसे आपको ख़ैबर में खिलाया गया था। चुनांचे आप हज़रत आइशा रज़ि० से फ़रमाते थे, ऐ आइशा ! ख़ैबर में जो खाना मैंने खा लिया था, उसकी तक्लीफ़ बराबर महसूस कर रहा हूं। इस वक़्त मुझे महसूस हो रहा है कि उस ज़हर के असर से मेरी रगे जां (प्राण-नड़ी) कटी जा रही है।[4]

आपने सहाबा किराम को भी वसीयत फ़रमाई, फ़रमाया, 'नमाज़-नमाज़, और तुम्हारे आधीन ! (यानी लौंडी और ग़ुलाम) आपने ये शब्द कई बार दोहराए।[5]

इधर चेहरे पर आपने एक चादर डाल रखी थी। जब सांस फूलने लगी तो उसे चेहरे से हटा देते। उसी हालत में आपने फ़रमाया, (और यह आपका आख़िरी कलाम (बोली) और लोगों के लिए आपकी आख़िरी वसीयत थी) कि

---

1. बुख़ारी 2/638
2. कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि बात करने और ख़ुशख़बरी देने की यह घटना मुबारक ज़िंदगी के आख़िरी दिन नहीं, बल्कि आख़िरी सप्ताह में घटी थी, देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/282
3. सहीह बुख़ारी 2/641
4. वही, 2/637
5. वही, 2/637

यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत। उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया—उनके इस काम से आप डरा रहे थे (अरब की धरती पर दो दीन बाक़ी न छोड़े जाएं।)[1]

## मरणासन्न की स्थिति

फिर मरणासन्न की स्थिति शुरू हो गई और हज़रत आइशा रज़ि॰ ने आपको अपने ऊपर सहारा देकर टेक लिया।

उनका बयान है कि अल्लाह की एक नेमत मुझ पर यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने मेरे घर में मेरी बारी के दिन में लब्बे और सीने के दर्मियान वफ़ात पाई और आपकी मौत के वक़्त अल्लाह ने मेरा लुआब और आपका लुआब इकट्ठा कर दिया।

हुआ यह कि अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र आपके पास तशरीफ़ लाए, उनके हाथ में मिस्वाक थी, और मैं अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को टेके हुए थी। मैंने देखा कि आप मिस्वाक की तरफ़ देख रहे हैं। मैं समझ गई कि आप मिस्वाक चाहते हैं। मैंने कहा, आपके लिए ले लूं?

आपने सर से इशारा फ़रमाया कि हां।

मैंने मिस्वाक लेकर आपको दी, तो आपको कड़ी महसूस हुई। मैंने कहा, इसे आपके लिए नर्म कर दूं?

आपने सर के इशारे से कहा, हां।

मैंने मिस्वाक नर्म कर दी और आपने बहुत अच्छी तरह मिस्वाक की। आपके समने कटोरे में पानी था। आप पानी में हाथ डालकर पोंछते जाते थे और फ़रमाते जाते थे, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। मौत के लिए सख़्तियां हैं।[2]

मिस्वाक से फ़ारिग़ होते ही आपने हाथ या उंगली उठाई। निगाह छत की ओर बुलन्द की और दोनों होंठों पर कुछ हरकत हुई। हज़रत आइशा रज़ि॰ ने कान लगाया तो आप फ़रमा रहे थे, 'उन नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ, जिन्हें तूने इनाम से नवाज़ा। ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे। मुझ पर रहम कर और मुझे रफ़ीक़े आला में पहुंचा दे, ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आला।[3]

---

1. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 1/634, हदीस न॰ 435, 1330, 1390, 3453, 3454, 4441, 4443, 4444, 5815, 5816, तबक़ाते इब्ने साद 2/254
2. सहीह बुख़ारी 2/640
3. वही, सहीह बुख़ारी बाब मरज़ुन्नबी वाब आख़िरु मा तकल्लमन्नबी 2/638-641

आख़िरी वाक्य तीन बार दोहराया और उसी वक़्त हाथ झुक गया और आप रफ़ीक़े आला से जा मिले। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

यह घटना 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हि० दिन सोमवार, चाश्त के वक़्त घटित हुई। उस वक़्त नबी सल्ल० की उम्र तिरसठ साल चार दिन हो चुकी थी।

## भारी शोक

यह ख़बर तुरन्त फैल गई। मदीना वासियों पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा। हर ओर अंधेरा छा गया।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० हमारे यहां तशरीफ़ लाए, उससे बेहतर और चमकदार दिन हमने कभी नहीं देखा और जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने वफ़ात पाई, उससे ज़्यादा अप्रिय और अंधेरा भरा दिन भी हमने कभी नहीं देखा।[1]

आपकी मृत्यु पर हज़रत फ़ातिमा ने शोकाकुल हो फ़रमाया, 'ऐ अब्बा जान! जिन्होंने पालनहार की पुकार पर लब्बैक कहा, हाय अब्बा जान! जिनका ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस है, हाय अब्बा जान! हम जिब्रील को आपकी मौत की ख़बर देते हैं।'[2]

## हज़रत उमर रज़ि० का विचार

वफ़ात की ख़बर सुनकर हज़रत उमर रज़ि० के होश जाते रहे। उन्होंने खड़े होकर कहना शुरू किया कुछ मुनाफ़िक़ समझते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की मृत्यु हो गई, लेकिन सच तो यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की वफ़ात नहीं हुई, बल्कि आप अपने रब के पास तशरीफ़ ले गए हैं, जिस तरह मूसा बिन इम्रान अलै० तशरीफ़ ले गए थे, और अपनी क़ौम चालीस रात ग़ायब रहकर उनके पास फिर वापस आ गए थे, हालांकि वापसी से पहले कहां जा रहा था कि वह इंतिक़ाल कर चुके हैं।

---

1. दारमी, मिश्कात, 2/547, इन्हीं हज़रत अनस रज़ि० से इन शब्दों में भी रिवायत है कि जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, हर चीज़ रोशन हो गई और जिस दिन आपने वफ़ात पाई, हर चीज़ अंधेरी हो गई और अभी हमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने हाथ भी न झाड़े थे, बल्कि आपके दफ़न ही में लगे हुए थे कि अपने दिलों को बदला हुआ महसूस किया। (जामेअ तिर्मिज़ी 5/588, 589)
2. सहीह बुख़ारी, बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० 2/641

ख़ुदा की क़सम, अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़रूर पलटकर आएंगे और उन लोगों के हाथ-पांव काट डालेंगे जो समझते हैं कि आपकी मौत वाक़े हो चुकी है।[1]

## हज़रत अबूबक्र रज़ि० का विचार

इधर हज़रत अबूबक्र सख़ में वाक़े अपने मकान से घोड़े पर सवार होकर तशरीफ़ लाए और उतरकर मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए। फिर लोगों से कोई बात किए बग़ैर सीधे हज़रत आइशा रज़ि० के पास गए और अल्लाह के रसूल सल्ल० का क़स्द फ़रमाया।

आपका मुबारक जिस्म धारदार यमनी चादर से ढका हुआ था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने चेहरे पर से चादर उठाई, उसे चूमा और रोए, फिर फ़रमाया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान। अल्लाह आप पर दो मौत जमा नहीं करेगा। जो मौत आप पर लिख दी गई थी, वह आपको आ चुकी।

इसके बाद अबूबक्र रज़ि० बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त भी हज़रत उमर रज़ि० लोगों से बात कर रहे थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे कहा, उमर बैठ जाओ। हज़रत उमर रज़ि० ने बैठने से इंकार कर दिया। उधर सहाबा किराम हज़रत उमर रज़ि० को छोड़कर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ओर मुतवज्जह हो गए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया—

'तुममें से जो व्यक्ति मुहम्मद सल्ल० की पूजा करता था, तो (वह जान ले) कि मुहम्मद सल्ल० की मौत वाक़े हो चुकी है और तुममें से जो व्यक्ति अल्लाह की इबादत करता था, तो यक़ीनन अल्लाह हमेशा ज़िंदा रहने वाला है। कभी नहीं मरेगा। अल्लाह का इर्शाद है, मुहम्मद तो रसूल हैं, इनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, तो क्या अगर उनकी मौत वाक़े हो जाए या वे क़त्ल कर दिए जाएं, तो तुम लोग अपनी एड़ के बल पलट जाओगे? और जो आदमी अपनी एड़ के बल पलट जाए तो (याद रखे कि) वह अल्लाह को कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच सकता और बहुत जल्द अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा।' (3 : 144)

सहाबा किराम जो अब तक बड़े दुखी और शोकाकुल थे, उन्हें हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यह वक्तव्य सुनकर विश्वास हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० वाक़ई वफ़ात पा चुके हैं। चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अल्लाह की क़सम! ऐसा लगता था, मानो लोगों ने जाना ही न था कि

---

1. इब्ने हिशाम, 2/655

अल्लाह ने यह आयत उतारी है, यहां तक कि अबूबक्र रज़ि० ने उसकी तिलावत की तो सारे लोगों ने उनसे यह आयत ली और जब किसी इंसान को मैं सुनता तो वह इसी की तिलावत कर रहा होता।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम, मैंने ज्यों ही अबूबक्र रज़ि० को यह आयत तिलावत करते हुए सुना मेरी पीठ टूटकर रह गई, यहां तक कि मेरे पांव मुझे उठा ही नहीं रहे थे और यहां तक कि अबूबक्र को इस आयत की तिलावत करते सुनकर मैं ज़मीन की ओर लुढ़क गया, क्योंकि मैं जान गया कि वाक़ई नबी सल्ल० की मौत वाक़े हो चुकी है।[1]

## तैयारी और कफ़न-दफ़न

उधर नबी सल्ल० की तैयारी और कफ़न-दफ़न से पहले ही आपकी जानशीनी के मामले में मतभेद हो गया। सक़ीफ़ा बिन साइदा में मुहाजिर और अंसार के बीच विवाद छिड़ गया। तेज़-तेज़ बातें हुईं, सवाल व जवाब हुआ और आख़िर में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त पर सब सहमत हो गए।

इस काम में सोमवार का बाक़ी दिन गुज़र गया और रात आ गई। लोग नबी सल्ल० की तैयारी और कफ़न-दफ़न के बजाए इस दूसरे काम में लगे रहे, फिर रात गुज़री और मंगल की सुबह हुई। उस वक़्त तक आपका मुबारक जिस्म एक धारदार यमनी चादर से ढका बिस्तर ही पर रहा। घर के लोगों ने बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दिया था।

मंगल के दिन आपके कपड़े उतारे बग़ैर ग़ुस्ल किया गया। ग़ुस्ल देने वाले लोग थे—हज़रत अब्बास, हज़रत अली, हज़रत अब्बास के दो सुपुत्र फ़ज़्ल और क़स्म, अल्लाह के रसूल सल्ल० के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम शक़रान, हज़रत उसामा बिन ज़ैद, और औस बिन ख़ौली रज़ि०। हज़रत अब्बास, फ़ज़्ल और क़स्म आपकी करवट बदल रहे थे, हज़रत उसामा और शक़रान पानी बहा रहे थे, हज़रत अली रज़ि० ग़ुस्ल दे रहे थे, और हज़रत औस ने आपको अपने सीने से टेक रखा था।[2]

आपको पानी और बेर की पत्ती से तीन ग़ुस्ल दिया गया और क़ुबा में स्थित साद बिन ख़ैसमा के ग़र्स नामी कुंएं से ग़ुस्ल दिया गया। आप उसका पानी

---

1. सहीह बुख़ारी 2/640, 641
2. देखिए इब्ने माजा 1/521

पिया करते थे।[1]

इसके बाद आपको तीन यमनी चादरों में कफ़नाया गया, उनमें कुरता और पगड़ी न थी।[2] बस आपको चादरों ही में लपेट दिया गया था।

आपकी आख़िरी आरामगाह के बारे में भी सहाबा किराम की राएं अलग-अलग थीं, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि कोई नबी भी नहीं उठाया गया, मगर उसे वहीं दफ़्न किया गया जहां उठाया गया।

इस फ़ैसले के बाद हज़रत अबू तलहा ने आपका वह बिस्तर उठाया जिस पर आपकी वफ़ात हुई थी और उसी के नीचे क़ब्र खोदी। क़ब्र लहद वाली (बग़ली) खोदी गई थी।

इसके बाद बारी-बारी दस-दस सहाबा किराम ने हुजरा शरीफ़ में दाख़िल होकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ी, कोई इमाम न था। सबसे पहले आपके वंश वालों (बनू हाशिम) ने नमाज़ पढ़ी। फिर मुहाजिरों ने, फिर अंसार ने, फिर मर्दों के बाद औरतों ने और उनके बाद बच्चों ने।[3]

नमाज़ जनाज़ा पढ़ने में मंगल का पूरा दिन गुज़र गया और बुध की रात आ गई। रात में पाक ज़िस्म को दफ़्न कर दिया गया।

चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि हमें अल्लाह के रसूल सल्ल० के दफ़्न किए जाने का पता न चला, यहां तक कि हमने बुध की रात के बीच के वक़्तों में (और एक रिवायत के मुताबिक़, आख़िर रात में) फावड़ों की आवाज़ सुनी।[4]

---

1. तफ़्सील तबक़ाते इब्ने साद 2/277, 281 में देखिए
2. सहीह बुख़ारी 1/169, जनाइज़ बाबुल सियाबिल बीज़ लिल कफ़न, फ़त्हुल बारी 3/162, 167, 168, हदीस न० 1264, 1271, 1272, 1273, 1387, सहीह मुस्लिम जनाइज़, बाब कफ़नुल मैयत 1/306, हदीस न० 45
3. देखिए मुअत्ता इमाम मालिक, किताबुल जनाइज़, बाब मा जा-अ फ़ी दफ़निल मैयत 1/231, तबक़ाते इब्ने साद 2/288, 292
4. मुस्नद अहमद 6/62, 274, मृत्यु-घटना के विवरण के लिए देखिए सहीह बुख़ारी बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० और उसके बाद के कुछ बाब मय फ़त्हुल बारी, साथ ही सहीह बुख़ारी, मिश्कातुल मसाबीह, बाब वफ़ातुन्नबी सल्ल०, इब्ने हिशाम 2/649-665, तलक़ीहे फ़हूम अह्लुल असर पृ० 38, 39, रहमतुल लिल आलमीन 1/277-286, समय का निर्धारण आमतौर से रहमतुल लिल आलमीन से लिया गया है।

# रसूलुल्लाह सल्ल० का घराना

**1. हज़रत ख़दीजा रज़ि०**—हिजरत से पहले मक्का में नबी सल्ल० का घराना आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० पर सम्मिलित था। शादी के वक़्त आपकी उम्र 25 साल थी और हज़रत ख़दीजा की उम्र 40 साल। हज़रत ख़दीजा रज़ि० आपकी पहली बीवी थीं और उनके जीते जी आपने कोई और शादी नहीं की।

आपकी सन्तान में हज़रत इब्राहीम के अलावा तमाम बेटे-बेटियां इन्हीं हज़रत ख़दीजा के गर्भ से थीं। बेटों में से तो कोई नहीं बच सका, अलबत्ता बेटियां जीवित रहीं। उनके नाम हैं—1. ज़ैनब, 2. रुक़ैया, 3. उम्मे कुलसूम, और 4. फ़ातिमा रज़ि०।

ज़ैनब की शादी हिजरत से पहले उनके फुफेरे भाई हज़रत अबुल आस बिन रबीअ से हुई। रुक़ैया और उम्मे कुलसूम की शादी एक के बाद एक हज़रत उस्मान रज़ि० से हुई। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी बदर और उहुद की लड़ाइयों के बीच वाली मुद्दत में, हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० से हुई और उनके गर्भ से हज़रत हसन, हुसैन, ज़ैनब और उम्मे कुलसूम रज़ि० पैदा हुईं।

मालूम है कि नबी सल्ल० को उम्मत के मुक़ाबले में यह प्रमुख विशेषता प्राप्त थी कि आप अनेकानेक उद्देश्यों को सामने रखकर चार से ज़्यादा शादियां कर सकते थे। चुनांचे जिन औरतों से आपने निकाह किया, उनकी तायदाद ग्यारह थी, जिनमें से नौ बीवियां आपकी वफ़ात के वक़्त मौजूद थीं और दो बीवियां आपकी ज़िंदगी ही में वफ़ात पा चुकी थीं। (यानी हज़रत ख़दीजा रज़ि० और उम्मुल मसाकीन हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ि०) इनके अलावा दो औरतें और हैं जिनके बारे में मतभेद है कि आपका उनसे निकाह हुआ था या नहीं, लेकिन इस पर सहमत हैं कि उन्हें आपके पास विदा नहीं किया गया।

नीचे हम इन पाक बीवियों के नाम और थोड़े में उनके हालात क्रमवार लिख रहे हैं।

**2. हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ि०**—इनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ख़दीजा से वफ़ात के लगभग एक महीने बाद नुबूवत के दसवें साल शव्वाल के महीने में शादी की। आपसे पहले हज़रत सौदा अपने चचेरे भाई सकरान बिन अम्र के निकाह में थीं और वह उन्हें बेवा छोड़कर इंतिक़ाल कर चुके थे। हज़रत सौदा रज़ि० की वफ़ात शव्वाल सन् 54 हि० मे मदीना में हुई।

**3. हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०**—इनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने नुबूवत के ग्यारहवें साल शव्वाल के महीने में शादी की। यानी हज़रत सौदा से शादी के एक साल बाद और हिजरत से दो साल पांच महीने पहले। उस वक़्त उनकी उम्र छः वर्ष थी। फिर हिजरत के सात माह बाद शव्वाल सन् 01 हि० में उन्हें विदा किया गया। उस वक़्त उनकी उम्र 9 साल थी और वह कुंवारी थीं। उनके अलावा किसी और कुंवारी औरत से आपने शादी नहीं की।

हज़रत आइशा रज़ि० आपकी सबसे चहेती बीवी थीं और उम्मत की औरतों में सबसे ज़्यादा समझदार और विदुषी थीं। औरतों पर उनकी प्रमुखता ऐसे ही है जैसे तमाम खानों पर सरीद की प्रमुखता। 117 शाबान सन् 57 हि० या सन् 58 हि० में हज़रत आइशा रज़ि० ने वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न की गईं।

**4. हज़रत हफ़सा बिन्त उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०**—इनके पहले शौहर ख़नीस बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० थे जो बद्र और उहद के बीच की मुद्दत में वफ़ात पा गए और वह बेवा हो गईं। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे शादी कर ली। शादी की यह घटना सन् 03 हि० की है। शाबान 45 हि० में साठ साल की उम्र में मदीना में वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न हुई

**5. हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ि०**—यह क़बीला बनू हिलाल बिन आमिर बिन सअसआ से ताल्लुक़ रखती थीं। ग़रीबों-मिस्कीनों के लिए दया-भाव रखती थीं, इसीलिए उनकी उपाधि ही उम्मुल मसाकीन हो गई थीं। यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श के निकाह में थीं। वह उहुद की लड़ाई में शहीद हो गए तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सन् 04 हि० में उनसे शादी कर ली, मगर उसके बाद सिर्फ़ तीन माह या आठ महीने ज़िंदा रहीं और रबीउल आख़र या ज़ीक़ादा सन् ०४ हि० में इंतिक़ाल कर गईं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उन्हें बक़ीअ में दफ़न किया गया।

**6. उम्मे सलमा बिन्त अबी उमैया रज़ि०**—यह अबू सलमा रज़ि० के निकाह में थीं, जुमादल आख़र सन् 04 हि० में हज़रत अबू सलमा का इंतिक़ाल हो गया तो उनके बाद शव्वाल सन् 04 हि० में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे शादी कर ली। बहुत समझदार और बड़ी बुद्धिमान थीं। चौरासी साल की उम्र में सन् 59 हि० में और कहा जाता है कि सन् 62 हि० में वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न की गईं।

**7. ज़ैनब बिन्त जह्श बिन रिआब रज़ि०**—यह क़बीला बनू असद बिन ख़ुज़ैमा से ताल्लुक़ रखती थीं और अल्लाह के रसूल सल्ल० की फूफी की बेटी थीं। इनकी शादी पहले हज़रत ज़ैद बिन हारिसा से हुई थी, जिन्हें अल्लाह के

रसूल सल्ल० का बेटा समझा जाता था, लेकिन हज़रत ज़ैद से निबाह न हो सका और उन्होंने तलाक़ दे दी। इद्दत ख़त्म होने के बाद अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़िताब करते हुए फ़रमाया—

'जब ज़ैद ने उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, तो हमने उन्हें आपके निकाह में दे दिया।'

उन्हीं के ताल्लुक़ से सूरः अह्ज़ाब की और कई आयतें उतरीं, जिनमें लय पालक के विवाद का दो टूक फ़ैसला कर दिया गया। विवरण आगे आ रहा है। हज़रत ज़ैनब से रसूलुल्लाह सल्ल० की शादी ज़ीक़ादा सन् 05 हि० में और कहा जाता है कि सन् 04 हि० में हुई। यह तमाम औरतों से बढ़कर इबादतें करने वाली और सदक़ा करने वाली ख़ातून थीं। सन् 20 हि० में वफ़ात पाई। उस वक़्त उनकी उम्र 53 साल थी और यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उम्महातुल मोमिनीन में पहली बीवी हैं, जिनका इंतिक़ाल हुआ। हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और उन्हें बक़ीअ में दफ़न किया गया।

**8. जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ि०**—इनके वालिद क़बीला ख़ुज़ाआ की शाख़ा बनुल मुस्तलिक़ के सरदार थे। हज़रत जुवैरिया बनुल मुस्तलिक़ के क़ैदियों में लाई गई थीं और हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास के हिस्से में पड़ी थीं। उन्होंने हज़रत जुवैरिया से एक तैशुदा रक़म के बदले आज़ाद कर देने का मामला कर लिया। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी ओर से तैशुदा रक़म अदा कर दी और उनसे शादी कर ली। यह शाबान सन् 05 या 06 हिजरी की घटना है। इस शादी के नतीजे में मुसलमानों ने बनुल मुस्तलिक़ के सौ घराने आज़ाद कर दिए और कहा कि ये लोग अल्लाह के रसूस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ससुराली हैं। चुनांचे यह अपनी क़ौम के लिए सारी औरतों से बढ़कर बरकत वाली साबित हुई। रबीउल अव्वल सन् 56 हि० या 55 हिजरी में वफ़ात पाई। उम्र 65 वर्ष थी।

**9. उम्मे हबीबा रमला बिन्त अबू सुफ़ियान रज़ि०**—यह उबैदुल्लाह बिन जह्श के निकाह में थीं और उसके साथ हिजरत करके हब्शा भी गई थीं, लेकिन उबैदुल्लाह ने वहां जाने के बाद इस्लाम से विमुख होकर ईसाई धर्म अपना लिया और फिर वहीं इंतिकाल कर गया, लेकिन उम्मे हबीबा अपने दीन और अपनी हिजरत पर क़ायम रहीं।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुहर्रम 07 हि० में अम्र बिन उमैया जमरी को अपना ख़त देकर नजाशी के पास भेजा तो नजाशी को यह पैग़ाम भी दिया

कि उम्मे हबीबा से आपका निकाह कर दे। उसने उम्मे हबीबा की मंज़ूरी के बाद उनसे आपका निकाह कर दिया और शुरहबील बिन हसना के साथ उन्हें आपकी ख़िदमत में भेज दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर से वापसी के बाद उनकी रुख़सती कराई। सन् 42 हि० या 44 हि० या 50 हि० में वफ़ात पाई।

**10. हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ बिन अख़तब रज़ि०**—यह बनी इस्राईल से थीं और ख़ैबर में क़ैद की गईं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें अपने लिए चुन लिया और आज़ाद करके शादी कर ली। यह ख़ैबर-विजय के बाद की घटना है। इसके बाद ख़ैबर से 12 मील की दूरी पर मदीना के रास्ते में मद्दे सहबा के पास उन्हें रुख़्सत कराया। सन् 50 हि० में और कहा जाता है कि सन् 52 हि० में और कहा जाता है कि सन् 36 हि० में वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न की गई।

**11. हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ि०**—यह उम्मुल फ़ज़्ल लुबाबा बिन्त हारिस रज़ि० की बहन थीं। उनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ीक़ादा सन् 07 हि० में उमरा क़ज़ा से फ़ारिग़ होने और सहीह कथन के अनुसार एहराम से हलाल होने के बाद शादी की और मक्का से 9 मील दूर सर्फ़ नामी जगह में उन्हें रुख़्सत कराया। सन् 61 हि० और कहा जाता है कि सन् 63 हि० में वहीं उनकी वफ़ात भी हुई और वहीं दफ़न भी की गई। उनकी क़ब्र की जगह आज भी लोगों में जानी-पहचानी है।

ये ग्यारह बीवियां हुईं जो अल्लाह के रसूल सल्ल० के निकाह में आईं और आपके साथ रहीं। इनमें से दो बीवियां यानी हज़रत ख़दीजा और हज़रत ज़ैनब उम्मुल मसाकीन की वफ़ात आपकी ज़िंदगी ही में हुई और नौ बीवियां आपकी वफ़ात के बाद हयात रहीं।

इनके अलावा दो और औरतें जो आपके पास रुख़्सत नहीं की गईं, उनमें से एक क़बीला बनू किलाब से ताल्लुक़ रखती थीं और एक क़बीला किन्दा से। यही क़बीला किन्दा वाली ख़ातून (महिला) जोनिया के नाम से मशहूर हैं। इनका आपसे विवाह हुआ था या नहीं और इनका नाम और नसब क्या था, इस बारे में सीरत लिखने वालों के बीच बड़े मतभेद हैं जिनका विवरण देने की हम कोई ज़रूरत नहीं महसूस करते।

जहां तक लौंडियों का मामला है, तो मशहूर यह है कि आपने दो लौंडियों को अपने पास रखा—

एक मारिया क़िब्तिया को, जिन्हें मिस्र के बादशाह मक़ूक़िस ने उपहार के

रूप में भेजा था। इनके गर्भ से आपके पुत्र इब्राहिम पैदा हुए जो बचपन ही में 28 या 29 शव्वाल सन् 10 हि० मुताबिक़ 28 जनवरी सन् 632 ई० को मदीना में इंतिक़ाल कर गए।

दूसरी लौंडी रेहाना बिन्त ज़ैद थीं जो यहूदियों के क़बीले बनी नज़ीर या बनी क़ुरैज़ा से ताल्लुक़ रखती थीं। यह बनू क़ुरैज़ा के क़ैदियों में थीं। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन्हें अपने लिए चुना था और वह आपके क़ब्ज़े में थीं।

इनके बारे में कुछ शोध करने वालों का कहना है कि इन्हें नबी सल्ल० ने लौंडी की हैसियत में नहीं रखा था, बल्कि आज़ाद करके शादी कर ली थी, लेकिन इब्ने क़य्यिम की नज़र में पहला कथन प्रमुख है।

अबू उबैदा ने इन दो लौंडियों के अलावा और दो लौंडियों का उल्लेख किया है, जिसमें से एक का नाम जमीला बताया जाता है जो किसी लड़ाई में गिरफ़्तार होकर आई थीं और दूसरी कोई और लौंडी थीं, जिन्हें हज़रत ज़ैनब बिन्त जह्श ने आपको हिबा किया था।[1]

यहां ठहरकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी के एक पहलू पर तनिक ध्यान देने की ज़रूरत है। आपने अपनी जवानी के बड़े ताक़त भरे और अच्छे दिन यानी लगभग 30 वर्ष सिर्फ़ एक बीवी को काफ़ी समझते हुए गुज़ार दिए और वह भी ऐसी बीवी पर पर लगभग बुढ़िया थीं, यानी पहले हज़रत ख़दीजा पर और फिर हज़रत सौदा पर, जो क्या यह विचार किसी दर्जे में भी मुनासिब समझा जा सकता है कि इस तरह इतनी मुद्दत बिता देने के बाद जब आप बुढ़ापे की दहलीज़ पर पहुंच गए तो आपके अन्दर यकायकी वासना इतनी ज़्यादा बढ़ गई कि आपको एक के बाद एक नौ शादियां करनी पड़ीं। जी नहीं! आपकी ज़िंदगी इन दोनों हिस्सों पर नज़र डालने के बाद कोई भी होशमंद आदमी इस विचार को उचित नहीं मान सकता।

सच तो यह है कि आपने इतनी बहुत सारी शादियां कुछ दूसरे ही उद्देश्यों से की थीं, जो आम शादियों के निश्चित उद्देश्य से बहुत ही ज़्यादा उच्च और महान थे।

इसे इस तरह स्पष्ट किया जा सकता है कि आपने हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़्सा रज़ि० से शादी करके हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० से जो ससुराली रिश्ता क़ायम किया, इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ि० से एक के बाद दूसरी दो लड़कियों हज़रत रुक़ैया और हज़रत उम्मे कुलसूम की

---

1. देखिए ज़ादुल मआद 1/29

शादी करके और हज़रत अली रज़ि० से अपनी चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी करके उनसे जो ससुराली रिश्ते क़ायम किए, उनका उद्देश्य यह था कि आप इन चारों बुज़ुर्गों से ताल्लुक़ात बिल्कुल पक्के कर लें, क्योंकि ये चारों बुज़ुर्ग पेचीदा से पेचीदा और विकट से विकट परिस्थितियों में भी इस्लाम के लिए जिस फ़िदाकारी से और अपना सब कुछ लगा देने की भावना से जो नुमायां काम किया है, उसे सब जानते हैं।

अरब का तरीक़ा था कि वे ससुराली रिश्तों का बड़ा आदर करते थे। उनके नज़दीक दामादी का रिश्ता अलग-अलग क़बीलों के दर्मियान क़रीबी हासिल करने का एक अहम अध्याय था और दामाद से लड़ाई लड़ना और उनके ख़िलाफ़ मोर्चा बनाना बड़े शर्म और लज्जा की बात थी।

इस चलन को सामने रखकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कुछ शादियां इस मक़्सद से कीं कि बहुत से लोगों और क़बीलों की इस्लाम दुश्मनी का ज़ोर तोड़ दें और उनकी दुश्मनी और नफ़रत की चिंगारी बुझा दें। चुनांचे उम्मे सलमा रज़ि० क़बीला बनू मख़्ज़ूम से ताल्लुक़ रखती थीं जो अबू जह्ल और ख़ालिद बिन वलीद का क़बीला था। जब नबी सल्ल० ने उनसे शादी कर ली तो ख़ालिद बिन वलीद में वह सख़्ती न रही, जिसका प्रदर्शन वह उहुद में कर चुके थे, बल्कि थोड़े ही अर्से बाद उन्होंने अपनी मर्ज़ी, ख़ुशी और ख़्वाहिश से इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

इसी तरह जब आपने अबू सुफ़ियान की बेटी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० से शादी कर ली, तो फिर अबू सुफ़ियान आपके मुक़ाबले में न आया और जब हज़रत जुवैरिया और हज़रत सफ़िया से आपने शादी कर ली, तो क़बीला मुस्तलिक़ और क़बीला बनी नज़ीर ने मोर्चाबन्दी छोड़ दी। हुज़ूर सल्ल० के निकाह में इन दोनों बीवियों के आने के बाद इतिहास में इनके क़बीलों का किसी हंगामे और जंगी दौड़-भाग का पता नहीं मिलता, बल्कि हज़रत जुवैरिया तो अपनी क़ौम के लिए सारी औरतों से ज़्यादा बरकत वाली साबित हुई, क्योंकि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे शादी कर ली तो सहाबा किराम ने उनके एक सौ घरानों को जो क़ैद में थे, आज़ाद कर दिया और कहा कि ये लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के ससुराली हैं। इनके दिलों पर इस एहसान का जो ज़ोरदार असर हुआ होगा, वह ज़ाहिर है।

इन सबसे बड़ी और महान बात यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० एक अनगढ़ क़ौम के तर्बियत देने, उनको पवित्र बनाने और संस्कृति और सभ्यता सिखाने पर नियुक्त थे, जो संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन की पाबन्दी और समाज

के बनाने-संवारने की ज़िम्मेदारियों को बिल्कुल नहीं जानती थी और इस्लामी समाज का गठन जिन नियमों के आधार पर करना था, उनमें मर्दों और औरतों के मेल की कोई गुंजाइश न थी, इसलिए अमेल के इस नियम की पाबन्दी करते हुए औरतों की प्रत्यक्ष रूप से ट्रेनिंग नहीं की जा सकती थी, हालांकि उनकी शिक्षा-दीक्षा की ज़रूरत मर्दों से कुछ कम अहम और ज़रूरी न थी, बल्कि कुछ ज़्यादा ही ज़रूरी थी।

इसलिए नबी सल्ल० के पास सिर्फ़ यही एक रास्ता रह गया था कि आप अलग-अलग उम्र और योग्यता की इतनी औरतों को चुन लें जो इस उद्देश्य के लिए काफ़ी हों। फिर आप उन्हें शिक्षा-दीक्षा दें, उनको पवित्र करें, उन्हें शरीअत का हुक्म सिखला दें और इस्लामी संस्कृति व सभ्यता से इस तरह सजा दें कि वे देहाती और शहरी, बूढ़ी और जवान हर तरह की औरतों की ट्रेनिंग कर सकें और शरीअत के मसलों को सिखा सकें और इस तरह औरतों में प्रचार की मुहिम के लिए काफ़ी हो सकें।

चुनांचे हम देखते हैं कि नबी सल्ल० के घरेलू हालात को उम्मत तक पहुंचाने का सेहरा ज़्यादातर इन उम्मत की माओं ही के सर है, इनमें भी ख़ासतौर पर वे माएं, जिन्होंने लम्बी उम्र पाई। मिसाल के तौर पर हज़रत आइशा रज़ि० कि उन्होंने नबी सल्ल० के कथन और कर्म ख़ूब-ख़ूब बयान किए हैं।

नबी सल्ल० का एक निकाह एक ऐसी जाहिली रस्म तोड़ने के लिए अमल में आया था, जो अरब समाज में पीढ़ियों से चली आ रही थी और बड़ी पक्की हो चुकी है। यह रस्म थी किसी को लयपालक बनाने की। लयपालक को जाहिली दौर में वही अधिकार और आदर प्राप्त था, जो सगे बेटे को हवा करता हैं।

फिर यह चलन और नियम अरब समाज में इतना जड़ पकड़ चुका था कि उसका मिटाना आसान न था, लेकिन यह नियम इन बुनियादों और नियमों से बड़ी कड़ाई के साथ टकराता था, जिन्हें इस्लाम ने निकाह, तलाक़, मीरास और दूसरे मामलों में मुक़र्रर फ़रमाया था। इसके अलावा जाहिलियत का यह नियम अपने दामन में बहुत से ऐसे बिगाड़ और गन्दगी भी लिए हुए था, जिनसे समाज को पाक करना इस्लाम के बुनियादी मक़सदों में से एक था, इसलिए इस जाहिली नियम को ख़त्म करने के लिए अल्लाह ने रसूल सल्ल० की शादी हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश से फ़रमा दी।

हज़रत जैनब रज़ि० पहले हज़रत ज़ैद के निकाह में थीं जो रसूलुल्लाह के मुंहबोले बेटे थे, और ज़ैद बिन मुहम्मद कहे जाते थे। मगर दोनों में निबाह

मुश्किल हो गया और हज़रत ज़ैद ने तलाक़ देने का इरादा कर लिया। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बारे में बातें भी कीं। उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात के इशारे या अल्लाह के ख़बर देने से यह बात जान चुके थे कि अगर ज़ैद ने तलाक़ दी तो आपको हज़रत ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बाद उनसे शादी का हुक्म दिया जाएगा और यह वह वक़्त था जब तमाम कुफ़्फ़ार रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़िलाफ़ मोर्चा क़ायम किए हुए थे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० को सही ही यह डर पैदा हुआ कि अगर इन्हीं हालात में शादी करनी पड़ गई, तो मुनाफ़िक़, मुश्रिक और यहूदी बात का बतंगड़ बनाकर आपके ख़िलाफ़ सख़्त प्रोपगंडा करेंगे और भोले-भाले मुसलमानों को तरह-तरह के वस्वसों में डालकर उन पर बुरे प्रभाव डालेंगे। इसलिए हज़रत ज़ैद रज़ि० ने जब हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ देने के अपने इरादे के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें कीं तो आपने उन्हें हुक्म दिया कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० से निबाह करें और उन्हें तलाक़ न दें ताकि इन मुश्किल हालात में इस शादी का मरहला पेश न आए।

लेकिन अल्लाह को यह बात पसन्द न आई और आपको तंबीह फ़रमाई, इर्शाद हुआ—

'और जब आप उस व्यक्ति से कह रहे थे, जिस पर अल्लाह ने इनाम किया है (यानी हज़रत ज़ैद से) कि तुम अपने ऊपर अपनी बीवी को रोक रखो, और अल्लाह से डरो और आप अपने मन में वह बात छिपाए हुए थे, जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप लोगों से डर रहे थे, हालांकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार था कि आप उससे डरते।' (33 : 37)

अन्त में हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे ही दी। फिर उनकी इद्दत गुज़र गई, तो उनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० की शादी का फ़ैसला नाज़िल हुआ। अल्लाह ने यह निकाह आपके लिए ज़रूरी कर दिया था और कोई अधिकार और गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। इस सिलसिले में उतरने वाली यह आयत है—

'जब ज़ैद ने उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, तो हमने उसकी शादी आपसे कर दी, ताकि ईमान वालों पर अपने मुंहबोले बेटों की बीवियों के बारे में कोई हरज न रह जाए, जबकि वे मुंहबोले बेटे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें।' (33 : 37)

'मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी हैं।' (33 : 4)

इसका मक़्सद यह था कि मुंहबोले बेटों से मुताल्लिक़ जाहिली उसूल अमली तौर पर भी तोड़ दिया जाए, जिस तरह इससे पहले इस इर्शाद के ज़रिए कह करके तोड़ा जा चुका था।

'अन्हें इनके बाप की निस्बत से पुकारो, यही अल्लाह के नज़दीक इंसाफ़ की बात है।' (33 : 5)

इस मौक़े पर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि जब समाज में कोई रिवाज अच्छी तरह जड़ पकड़ लेता है, तो सिर्फ़ बात कहकर उसे मिटाना या उसमें तब्दीली लाना बहुत बार मुम्किन नहीं हुआ करता, बल्कि जो व्यक्ति उसके ख़ात्मे और तब्दीली की बात करता है, उसका अमली नमूना भी मौजूद रहना ज़रूरी हो जाता है। हुदैबिया समझौते के मौक़े पर मुसलमानों की ओर से जो हरकत की गई उससे यह सच्चाई ख़ूब अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है। उस मौक़े पर कहां तो मुसलमानों की फ़िदाकारी का यह हाल था कि जब उर्वः बिन मस्ऊद सक़फ़ी ने उन्हें देखा तो देखा कि रसूलुल्लाह का थूक और खंकार भी उनमें से किसी न किसी सहाबी के हाथ ही में पड़ रहा है और जब आप वुज़ू फ़रमाते हैं तो सहाबा किराम आपके वुज़ू से गिरने वाला पानी लेने के लिए इस तरह टूट पड़ रहे हैं कि मालूम होता है आपस में उलझ पड़ेंगे। जी हां, ये वही सहाबा किराम थे जो पेड़ के नीचे मौत या न भागने पर बैअत करने के लिए एक दूसरे से बाज़ी ले जा रहे थे और ये वही सहाबा किराम थे जिनमें अबूबक्र व उमर रज़ि० जैसे रसूल सल्ल० के जांनिसार भी थे, लेकिन इन्हीं सहाबा किराम को, जो आप पर मर मिटना अपना सौभाग्य और अपनी कामियाबी समझते थे, जब आपने समझौते तै कर लेने के बाद हुक्म दिया कि उठकर अपनी हदयि (क़ुरबानी के जानवर) ज़िब्ह कर दें, तो आपके हुक्म का पालन करने के लिए कोई टस से मस न हुआ, यहां तक कि आप परेशान हो गए, लेकिन जब हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने आपको मश्विरा दिया कि आप उठकर चुपचाप अपना जानवर ज़िब्ह करें और आपने ऐसा ही किया तो हर व्यक्ति आपके तरीक़े की पैरवी के लिए दौड़ पड़ा और तमाम सहाबा ने लपक -लपककर अपने जानवर ज़िब्ह कर दिए।

इस घटना से समझा जा सकता है कि किसी पक्के चलन को मिटाने के लिए कहने और करने में कितना अन्तर है। इसलिए लयपालक के जाहिली चलन को अमली तौर पर तोड़ने के लिए आपका निकाह आपके मुंहबोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० की तलाक़शुदा से कराया गया।

इस निकाह का अमल में आना था कि मुनाफ़िक़ों ने आपके ख़िलाफ़ बड़े भारी पैमाने पर झूठे प्रचार कर दिए और तरह-तरह के वस्वसे और अफ़वाहें

फैलाईं, जिसके कुछ न कुछ प्रभाव सीधे-सादे मुसलमानों पर भी पड़े। इस प्रचार को ताक़त पहुंचाने के लिए एक शरई पहलू भी मुनाफ़िक़ों के हाथ आ गया था कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० आपकी पांचवीं बीवीं थीं, जबकि मुसलमान चार से ज़्यादा बीवियों का हलाल होना जानते ही न थे।

इन सबके अलावा प्रोपगंडे की असल जान यह थी कि हज़रत ज़ैद, अल्लाह के रसूल सल्ल० के बेटे समझे जाते थे और बेटे की बीवी से शादी करना बड़ी गन्दी बात थी। अन्ततः अल्लाह ने सूरः अहज़ाब में इन दोनों विषयों के बारे में सन्तोषजनक आयतें उतारीं और सहाबा किराम को मालूम हो गया कि इस्लाम में मुंहबोले की कोई हैसियत नहीं और यह कि अल्लाह ने कुछ बहुत ऊंचे और विशेष उद्देश्यों के तहत अपने रसूल सल्ल० को किसी विशेषता के साथ शादी की तायदाद के सिलसिले में इतनी व्यापकता दी है जो किसी और को नहीं दी गई है।

मोमिनों की माओं के साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० का रहना-सहना बड़ा सज्जनतापूर्ण, सम्मानपूर्ण और श्रेष्ठपूर्ण था। बीवियां भी बड़े धैर्य, नम्रता, सेवा और दाम्पत्य अधिकारों की देखभाल का योग थीं, हालांकि रूखी-सूखी और सख़्त ज़िंदगी गुज़ार रही थी, जिसे सहन कर लेना दूसरों के बस की बात नहीं थी।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कभी मैदे की नर्म रोटी खाई हो, यहां तक कि अल्लाह से जा मिले और न कभी आपने अपनी आंख से भुनी हुई बकरी देखी।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि दो-दो महीने गुज़र जाते, तीसरे महीने का चांद नज़र आ जाता और रसूलुल्लाह सल्ल० के घर में आग न जलती। हज़रत उर्वः ने मालूम किया, तब आप लोग क्या खाती थीं, फ़रमाया कि बस दो काली चीज़ें, यानी खजूर और पानी।[2]

इस विषय की हदीसें बहुत हैं।

इस तंगी और परेशानी के बावजूद पाक बीवियों से ऐसी हरकत न हुई, जिस पर सज़ा दी जा सकती हो, सिर्फ़ एक बार ऐसा हुआ और वह भी इसलिए कि एक तो इंसानी फ़ितरत का तक़ाज़ा ही कुछ ऐसा है, दूसरे इसी बुनियाद पर कुछ आदेश भी देने थे। चुनांचे इसी बुनियाद पर अल्लाह ने जो आयत उतारी, वह यह है—

---

1. सहीह बुख़ारी 2/956
2. वही, वही

'ऐ नबी ! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और ज़ीनत चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हें साज़ व सामान देकर भलाई के साथ विदा कर दूं और अगर तुम अल्लाह, उसके रसूल और आख़िरत को चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुममें से नेकों के लिए ज़बरदस्त बदला तैयार कर रखा है।'

(33 : 28, 29)

अब इन पाक बीवियों के बड़कपन का अन्दाज़ा कीजिए कि इन सबने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को प्रमुखता दी और उनमें से कोई एक भी दुनिया की ओर न झुकी।

इसी तरह सौतों के बीच जो घटनाएं आए दिन घटती रहती हैं, पाक बीवियों के बीच तायदाद ज़्यादा होने के बावजूद भी इस तरह की घटनाएं शायद ही कभी घटी हों और वह भी एक इंसान की हैसियत से और इस पर भी जब अल्लाह ने तंबीह फ़रमाई तो दोबारा इस तरह की कोई बात पेश न आई। सूरः तहरीम की शुरू की पांच आयतों में इसी का उल्लेख है।

अन्त में यह अर्ज़ कर देने में हमें संकोच नहीं है कि हम इस मौक़े पर बहुपत्नि विवाह के विषय पर विवाद की ज़रूरत नहीं समझते, वे ख़ुद जिस तरह की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, जिस कड़ुवाहट और दुर्भाग्य का जीवन जी रहे हैं, जिस तरह की रुसवाइयों और अपराधों के बुरी तरह शिकार हैं और बहुपत्नि विवाह के नियमों से हटकर जिस प्रकार के क्लेश, दुख और परेशानियों का सामना कर रहे हैं, वह इस तरह के विवाह से उदासीन बना देने के लिए काफ़ी है।

यूरोप वालों का दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बहुपत्नि विवाह के नियमों पर आधारित सच होने का सबसे बड़ा गवाह है और सोचने-समझने वालों के लिए इसमें बड़ी शिक्षा है।

---

# चरित्र और गुण

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे चरित्र और ऐसे गुणों के मालिक थे कि जिसका बयान मुश्किल है। इसका प्रभाव यह होता था कि दिल आपके प्रति आदर से भर जाता था। चुनांचे आपकी हिफ़ाज़त और आपके मान-सम्मान में लोगों ने ऐसी-ऐसी फ़िदाकारी का सबूत दिया जिसकी मिसाल दुनिया के किसी और व्यक्ति के सिलसिले में नहीं पेश की जा सकती।

आपके साथी निछावर होने की हद तक आपसे लगाव रखते थे। उन्हें गवारा न था कि आपको खरोंच आ जाए, भले ही इसके लिए उनकी गरदनें क्यों न काट दी जाएं। इस तरह के लगाव और मुहब्बत की वजह यह थी कि आदत के तौर जिन बातों पर जान छिड़की जाती है उनमें से जितना ज़्यादा हिस्सा आपको मिला हुआ था, किसी और को प्राप्त न था।

नीचे हम अपनी कमज़ोरियों और ख़राबियों को स्वीकार करते हुए उन रिवायतों का सार पेश कर रहे हैं जिनका ताल्लुक़ आपके उच्च और श्रेष्ठ चरित्र व आचरण से है—

## मुबारक हुलिया

हिजरत के वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० उम्मे माबद ख़ुज़ाइया के ख़ेमे से गुज़रे तो उसने आपकी रवानगी के बाद अपने शौहर से आपके मुबारक हुलिए का जो नक़्शा खींचा, वह यह था—चमकता रंग, चमचमाता चेहरा, सुन्दर बनावट, न तोंदलेपन का ऐब, न गंजेपन की ख़ामी, सुन्दरता के साथ ढला हुआ साक्षात शरीर, सुरमा लगी आंखें, लम्बी पलकें, भारी आवाज़, लम्बी गरदन, काली-सफ़ेद आंखें, काली पलकें, बारीक और आपस में मिली हुई भवें, चमकदार काले बाल, चुप रहें तो गंभीरता, बोलें तो आकर्षण, दूर से (देखने में) सबसे ज़्यादा चमकदार और जमाल वाले, क़रीब से सबसे ख़ूबसूरत और मीठे, बातों में मिठास, बात स्पष्ट और दो टूक, न बहुत कम, न बहुत ज़्यादा, ऐसा कि मानो लड़ी से मोती झड़ रहे हों, बीच का क़द, न नाटा कि निगाह में न जांचे, न लंबा कि नागवार लगे, दो शाखों के बीच एक शाखा जो तीनों में सबसे ज़्यादा ताज़ा और देखने में भली और रौनक़दार, साथी आपके चारों ओर घेरा बनाए हुए, कुछ फ़रमाएं तो तवज्जोह से सुनते हैं, कोई हुक्म दें तो लपककर पूरा करते हैं, सभी उनका आज्ञापालन करते हैं, सबके आदरणीय, न झुंझलाहट, न बेकार की बातें।[1]

1. ज़ादुल मआद 2/54

हज़रत अली रज़ि० आपके गुणों का बखान करते हुए फ़रमाते हैं, आप न लंबे-तड़ंगे, न नाटे-खोटे, लोगों के हिसाब से बीच के क़द के थे, बाल न ज़्यादा घुंघराले थे, न बिल्कुल खड़े हुए, बल्कि दोनों के बीच की स्थिति थी, गालों में बहुत ज़्यादा मांस न था, न ठुड्डी छोटी और न माथा पतला, चेहरा किसी क़दर गोलाई लिए हुए था, रंग गोरा गुलाबी, आंखें लाली लिए हुए, पलकें लम्बी, जोड़ों और मोढ़ों की हड्डियां बड़ी-बड़ी, सीने पर नाफ़ तक बालों की हल्की-सी लकीर, बाक़ी जिस्म बाल से ख़ाली, हथेली और पांव पर मांस, चलते तो कुछ झटके से पांव उठाते और यों चलते मानो किसी ढलवान पर चल रहे हैं। जब किसी की ओर ध्यान देते तो पूरे वजूद के साथ ध्यान देते। दोनों कंधों के दर्मियान नुबूवत की मुहर थी। आप सारे नबियों में आख़िरी नबी, सबसे ज़्यादा दानी और सबसे बढ़कर जुर्रत वाले, सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे बढ़कर क़ौल व क़रार के पूरा करने वाले, सबसे ज़्यादा नर्म तबियत और सबसे शरीफ साथी, जो आपको देखता, रौब खाता, जो जान-पहचान के साथ मिलता, प्रिय रखता। आपके गुणों का बखान करने वाला यही कह सकता है कि मैंने आपसे पहले और आपके बाद आप जैसा नहीं देखा।[1]

हज़रत अली रज़ि० की एक रिवायत में है कि आपका सर बड़ा था। जोड़ों की हड्डियां भारी-भारी थीं। सीने के बीच बाल की लम्बी लकीर थी। जब आप चलते तो कुछ झुके हुए चलते, गोया किसी ढलवान से उतर रहे हैं।[2]

हज़रत जाबिर समुरा रज़ि० का बयान है कि आपका मुंह बड़ा था, आंखें हल्की लाली लिए हुए और एड़ियां बारीक।[3]

हज़रत अबू तुफ़ैल कहते हैं कि आप गोरे रंग, रौनक से भरा चेहरा और बीच के क़द वाले थे।[4]

हज़रत अनस बिन मालिक का इर्शाद है कि आपकी हथेलियां चौड़ी थीं और रंग चमकदार, न ख़ालिस सफ़ेद, न गेहुंवा, वफ़ात के वक़्त तक सर और चेहरे के बीस बाल भी सफ़ेद न हुए थे।[5] सिर्फ़ कनपटी के बालों में कुछ सफ़ेदी थी और कुछ बाल सर के सफ़ेद थे।[6]

---

1. इब्ने हिशाम 1/401, 402, तिर्मिज़ी मय शरह तोहफ़तुल अह्वज़ी 4/303
2. वही, तिर्मिज़ी मय शरह
3. सहीह मुस्लिम, 2/258
4. वही, वही
5. सहीह बुख़ारी 1/502
6. वही, वही, सही मुस्लिम 2/59

हज़रत अबू जुहैफ़ा कहते हैं कि मैंने आपके निचले होंठ के नीचे दाढ़ी बच्चा में सफ़ेदी देखीं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र का बयान है कि आपके दाढ़ी बच्चा में कुछ बाल सफ़ेद थे।[2]

हज़रत बरा का बयान है कि आपका क़द दर्मियानी था, दोनों कंधो के दर्मियान दूरी थी। बाल दोनों कानों की लौ तक पहुंचते थे। मैंने आपको लाल जोड़ा पहने हुए देखा कि कोई भी चीज़ आपसे ज़्यादा ख़ूबसूरत न देखी।[3]

पहले आप अह्ले किताब के जैसा रहना पसन्द करते थे, इसलिए बाल में कंघी करते तो मांग न निकालते, लेकिन बाद में निकाला करते थे।[4]

हज़रत बरा कहते हैं, आपका चेहरा सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत था और आपका चरित्र सबसे बेहतर था।[5]

उनसे पूछा गया, क्या नबी सल्ल० का चेहरा तलवार जैसा था, उन्होंने कहा, नहीं, बल्कि चांद जैसा था। एक रिवायत में है कि आपका चेहरा गोल था।[6]

रुबैअ बिन्त मुअव्विज़ कहती हैं कि अगर तुम हुज़ूर सल्ल० को देखते तो लगता कि तुमने उगते सूरज को देखा है।[7]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से ज़्यादा ख़ूबसूरत कोई चीज़ नहीं देखी। लगता था सूरज आपके चेहरे में रवां-रवां है और मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से बढ़कर किसी को तेज़ रफ़्तार नहीं देखा। लगता था ज़मीन आपके लिए लपेटी जा रही है। हम तो अपने आपको थका मारते थे और आप बिल्कुल निश्चिंत।[8]

हज़रत काब बिन मालिक का बयान है कि जब आप ख़ुश होते, तो चेहरा दमक उठता, मानो चांद का एक टुकड़ा है।[9]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/501, 502
2. वही, 1/502
3. वही, वही
4. वही, 1/503
5. वही, 1/502, सहीह मुस्लिम, 2/258
6. सही बुख़ारी, 1/502, सहीह मुस्लिम, 2/259
7. मुस्नद दारमी, मिश्कात, 2/577
8. जामेअ तिर्मिज़ी मय शरह तोहफ़तुल अह्वज़ी 4/306, मिश्कात 2/518
9. सहीह बुख़ारी 1/502

एक बार आप हज़रत आइशा रज़ि० के पास तशरीफ़ रखते थे। आप जूता सी रहे थे और वह धागा कात रही थीं। पसीना आया तो चेहरे की धारियां चमक उठीं। यह स्थिति देखकर हज़रत आइशा रज़ि० चकित हो उठीं और कहने लगीं कि अगर अबू कबीर हज़ली आपको देख लेता तो उसे मालूम हो जाता कि उसके इस शेर (पद) के हक़दार किसी और से ज़्यादा आप हैं :—

'जब उनके चेहरे की धारियां देखो तो वे यों चमकती हैं, जैसे रोशन बादल चमक रहा हो।'[1]

अबूबक्र रज़ि० आपको देखकर यह पद पढ़ते—

'आप अमानतदार हैं, चुने हुए बुज़ुर्ग हैं, भलाई की दावत देते हैं, मानो पूरे चांद की रोशनी हैं, जिससे अंधेरा आंख मचोली खेल रहा है।'[2]

हज़रत उमर रज़ि० ज़ुहैर का यह पद पढ़ते जो हरम बिन सनान के बारे में कहा गया था कि—

'अगर आप इंसान के सिवा किसी और चीज़ से होते, तो आप ही चौदहवीं की रात को रोशन करते।' फिर फ़रमाते कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ऐसे ही थे।[3]

जब आप ग़ुस्सा करते तो चेहरा लाल हो जाता, मानो दोनों गालों में अनार का दाना निचोड़ दिया गया है।[4]

हज़रत जाबिर बिन समुरा का बयान है कि आपकी पिंडुलियां कुछ पतली थीं और आप हंसते तो सिर्फ़ मुस्करा देते (आंखें सुर्मा लगी जैसी थीं) तुम देखते तो कहते कि अपनी आंखों में सुर्मा लगा रखा है, हालांकि सुर्मा न लगा होता।[5]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आपके दांत सबसे ख़ूबसूरत थे।[6]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का इर्शाद है कि आपके आगे के दोनों दांत अलग-अलग थे। जब आप बातें करते तो इन दांतों के बीच से नूर जैसा

---

1. तहज़ीब तारीख़ दमिश्क़ : इब्ने असाकिर
2. ख़ुलासतुस्सियर, पृ० 20
3. वही, ख़ुलासतुस्सियर, पृ० 20
4. मिश्कात 1/22, तिर्मिज़ी अबवाबुल क़द्र बाब मा जा-अ फ़ित्तशदीद फ़िल ख़ौज़ि फ़िलक़द्रि 2/35
5. जामेअ तिर्मिज़ी मय शरह तोहफ़तुल अह्वज़ी 4/306
6. सहीह मुस्लिम : किताबुत्तलाक़, बाब फ़िल ईला 3/1102 हदीस न० 1489

निकलता दिखाई देता।[1]

गरदन मानो चांदी की सफ़ाई के लिए गुड़िया की गरदन थी, पलकें लम्बी, दाढ़ी घनी, माथा चौड़ा, भवें मिली हुई और एक दूसरे से अलग, नाक ऊंची, गाल हलके, लुब्बा से नाफ़ तक छड़ी की तरह दौड़ा हुआ बाल और उसके सिवा पेट और सीने पर कहीं बाल नहीं, अलबत्ता बाज़ू और मोंढों पर बाल थे, पेट और सीना बराबर, सीना हमवार और चौड़ा, कलाइयां बड़ी-बड़ी, हथेलियां फैली हुई, क़द खड़ा, तलवे खाली, अंग बड़े-बड़े, जब चलते तो झटके के साथ चलते, कुछ झुकाव के साथ आगे बढ़ते और आसान चाल से चलते।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कोई हरीर व दीबा नहीं छूआ जो अल्लह के रसूल सल्ल० की हथेली से ज़्यादा नर्म रहा हो और कभी कोई अंबर या मुश्क या कोई ऐसी ख़ुशबू सूंघी जो अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़ुशबू से बेहतर रही हो।[3]

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैंने आपका हाथ अपने चेहरे पर रखा, तो वह बर्फ़ से ज़्यादा ठंडा और मुश्क से ज़्यादा ख़ुशबूदार था।[4]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि०, जो बच्चे थे, कहते हैं, आपने मेरे गाल पर हाथ फेरा, तो मैंने आपके हाथ में ऐसी ठंडक और ऐसी ख़ुशबू महसूस की मानो उसे आपने अत्तार के इत्रदान से निकाला है।[5]

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि आपका पसीना मानो मोती होता था और हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० कहती हैं कि यह पसीना ही सबसे अच्छी ख़ुशबू हुआ करती थी।[6]

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि आप किसी रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और आपके बाद कोई और गुज़रता, तो आपके जिस्म या पसीने की ख़ुशबू की वजह से जान जाता कि आप यहां से तशरीफ़ ले गए हैं।[7]

आपके दोनों कंधों के दर्मियान नुबूवत की मुहर थी, जो कबूतर के अंडे जैसी

---

1. तिर्मिज़ी, मिश्कात 2/518
2. ख़ुलासतुस्सियर पृ० 19, 20
3. सहीह बुख़ारी 1/503, सही मुस्लिम 2/257
4. सहीह बुख़ारी 1/502
5. सहीह मुस्लिम 2/256
6. वही, सही मुस्लिम
7. दारमी, मिश्कात, 2/517

और मुबारक जिस्म से मिलती-जुलती थी। यह बाईं हड्डी की कुटी (नर्म हड्डी) के पास थी। उन पर मस्सों की तरह तिलों का जमघट था।[1]

## चरित्र का गुण

नबी सल्ल० बड़ी सुन्दर भाषा बोलते थे। आप तबियत की रवानी, शब्द के निखार, वाक्यों का गठन, अर्थ की सुन्दरता और संकोच से दूरी के साथ-साथ व्यापक बातों से नवाज़े गए थे। आपको अपूर्व विवेक और अरब की तमाम भाषाओं का ज्ञान मिला हुआ था। चुनांचे आप हर क़बीले से उसी की भाषा और मुहावरों में बातें करते थे। आपमें बद्दुओं का ज़ोरे बयान और भाषा में शहरियों की सफ़ाई-सुथराई पाई जाती थी और वह्य पर आधारित रब की ताईद अलग से, सहनशीलता, सहनशक्ति, समर्थ होने पर भी माफ़ी और कठिन घड़ियों में धीरज ऐसे गुण थे, जिनके ज़रिए अल्लाह ने आपको प्रशिक्षित किया था। हर सहनशील व्यक्ति में कोई न कोई कमज़ोरी और कोई न कोई दोष जाना जाता है, पर नबी सल्ल० के आचरण व चरित्र की श्रेष्ठता का हाल यह था कि आपके ख़िलाफ़ दुश्मनों ने कष्ट पहुंचाने और बदमाशों के ज़ुल्म व ज़्यादती में जितनी बढ़ोत्तरी होती गई, आपके धैर्य और सहनशीलता में भी उतनी ही वृद्धि होती गई।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को जब भी दो कामों के बीच अधिकार दिया जाता, तो वही काम करते जो आसान होता, जब तक कि वह गुनाह का काम न होता। अगर गुनाह का काम होता तो आप सबसे बढ़कर उससे दूर रहते।

आपने कभी अपने निज के लिए बदला न लिया। अलबत्ता अगर अल्लाह की हुर्मत चाक की जाती तो आप अल्लाह के लिए बदला लेते।[2]

आप सबसे बढ़कर क्रोध और ग़ुस्से से दूर थे और सबसे जल्द राज़ी हो जाते थे। दानशीलता और दया-भाव ऐसा था कि उसका अन्दाज़ा ही नहीं किया जा सकता। आप उस व्यक्ति की तरह दान करते थे जिसे फ़क़्र (दानशीलता) का डर भी न हो।

इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि नबी सल्ल० सबसे बढ़कर दानशील थे और आपकी दानशीलता का बहाव रमज़ान में उस वक़्त ज़्यादा जोश पर होता, जब हज़रत जिब्रील आपसे मुलाक़ात फ़रमाते और हज़रत जिब्रील रमज़ान में

---

1. सहीह मुस्लिम 2/259, 260
2. सहीह बुख़ारी 2/503

आपसे हर रात मुलाक़ात फ़रमाते और क़ुरआन का दौर कराते।

पस अल्लाह के रसूल सल्ल० दानशीलता में ज़्यादा से ज़्यादा बढ़-चढ़कर रहते।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० का इर्शाद है कि ऐसा कभी न हुआ कि आपसे कोई चीज़ मांगी गई हो और आपने नहीं कह दिया हो।[2]

बहादुरी और दलेरी में भी आपका स्थान बहुत ऊंचा था। आप बहुत वीर थे। बड़े ही कठिन और मुश्किल मौक़ों पर, जबकि अच्छे-अच्छे जांबाज़ों और बहादुरों के पांव उखड़ गए, आप अपनी जगह बरक़रार रहे और पीछे हटने के बजाए आगे ही बढ़ते गए, पांव तनिक भर भी न डगमगाए। बड़े-बड़े बहादुर भी कभी न कभी भागे और पसपा हुए हैं, पर आपमें यह बात कभी न पाई गई।

हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि जब ज़ोर का रन पड़ता और लड़ाई के शोले ख़ूब भड़क उठते, तो हम अल्लाह के रसूल सल्ल० की आड़ लिया करते थे। आपसे बढ़कर कोई व्यक्ति दुश्मन के क़रीब न होता।[3]

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि एक दिन मदीना वालों को ख़तरा महसूस हुआ। लोग आवाज़ की तरफ़ दौड़े। रास्ते में अल्लाह के रसूल सल्ल० वापस आते हुए मिले। आप लोगों से पहले ही आवाज़ की ओर पहुंच (कर ख़तरे की जगह का जायज़ा ले) चुके थे। उस वक़्त आप अबू तलहा रज़ि० के एक नंगे घोड़े पर सवार थे। गरदन में तलवार डाल रखी थी और फ़रमा रहे थे, डरो नहीं, डरो नहीं[4], कोई ख़तरा नहीं।

आप सबसे ज़्यादा हयादार और पस्त निगाह थे। अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप परदानशीं कुंवारी लड़की से भी ज़्यादा हयादार और शर्मीले थे। जब आपको कोई बात नागवार गुज़रती, तो चेहरे से पता लग जाता।[5]

अपनी नज़रें किसी के चेहरे पर गाड़ते न थे, निगाह पस्त रखते थे और आसमान के मुक़ाबले में ज़मीन की तरफ़ नज़र ज़्यादा देर तक रहती थी। आमतौर से नीची निगाह से ताकते। हया का हाल यह था कि किसी से नागवार

1. वही, 1/502
2. वही, वही
3. शिफ़ा, क़ाज़ी अयाज़ 1/89, सिहाह और सुनन में भी इस विषय की रिवायत मौजूद है।
4. सहीह मुस्लिम 2/252, सहीह बुख़ारी 1/407
5. सहीह बुख़ारी 1/504

बात आमने-सामने न कहते और न किसी को कोई नागवार बात आप तक पहुंचती तो नाम लेकर उसका उल्लेख करते, बल्कि यों फ़रमाते कि क्या बात है कि कुछ लोग ऐसा कर रहे हैं। फ़रज़्दक़ के इस पद पर सबसे ज़्यादा सही आप ही उतरते थे—

'आप सबसे ज़्यादा न्यायी, पाकदामन, सच्चे और बेहतरीन अमानतदार थे। इसे आपके मित्र और शत्रु सभी मानते हैं। नुबूवत से पहले आपको अमीन कहा जाता था और जाहिलियत के बारे में आपके पास फ़ैसले के लिए मुक़दमे लाए जाते थे।

जामेअ तिर्मिज़ी में हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि एक बार अबू जह्ल ने आपसे कहा, हम आपको झूठा नहीं कहते, अलबत्ता आप जो कुछ लेकर आए हैं उसे झुठलाते हैं। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'जो लोग आपको नहीं झुठलाते, बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं।'[1] (6 : 33)

हिरक़्ल ने अबू सुफ़ियान से पूछा कि क्या इस नबी सल्ल० ने जो बात कही है, उसके कहने से पहले तुम लोग उसे झूठ से आरोपित करते थे?

तो अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि 'नहीं'।

आप सबसे ज़्यादा विनम्र और घमंड से दूर थे। जिस तरह बादशाहों के लिए उनके सेवक और दरबारी खड़े रहते हैं, इस तरह आप अपने लिए सहाबा किराम को खड़े होने से मना फ़रमाते थे, दीन-दुखियों से पूछना करते थे, ग़रीबों के साथ उठते-बैठते थे, ग़ुलाम की दावत मंज़ूर फ़रमाते थे।

सहाबा किराम में किसी भेदभाव के बिना एक आम आदमी की तरह बैठते थे। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप अपने जूते खुद टांकते थे, अपने कपड़े खुद सीते थे और अपने हाथ से इस तरह काम करते थे जैसे तुममें से कोई आदमी अपने घर के काम-काज करता है। आप भी इंसानों में से एक इंसान थे। अपने कपड़ों में जुएं खोजते थे, अपनी बकरी दूहते थे और अपना काम ख़ुद करते थे।

आप सबसे बढ़कर अह्द की पाबन्दी करते और रिश्तों को जोड़ने का काम करते थे। लोगों के साथ सबसे ज़्यादा दया से पेश आते थे, रहन-सहन और शिष्टाचार में सबसे अच्छे थे। आपका चरित्र महान था, दुष्चरित्र से सबसे ज़्यादा

---

1. मिश्कात 2/521

नफ़रत थी, गन्दी बात करने की न आदत थी, न संकोच के साथ भी गन्दी बात कहते थे, न लानत करते थे, न बाज़ार में चीखते-चिल्लाते थे, न बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि माफ़ी और दरगुज़र से काम लेते थे। किसी को अपने पीछे चलता हुआ न छोड़ते थे और न खाने-पीने में अपने दासों और दासियों को झिड़कते थे। अपने सेवक का काम ख़ुद ही कर देते थे।[1]

कभी अपने सेवक से उफ़ भी नहीं कहा, न किसी काम के करने या न करने पर ग़ुस्सा फ़रमाया। दीन-दुखियों से मुहब्बत रखते। उनके साथ उठते-बैठते और उनके जनाज़ों में हाज़िर होते थे। किसी फ़क़ीर को उसकी ग़रीबी की वजह से तुच्छ न समझते थे। एक बार आप सफ़र में थे। एक बकरी काटने-पकाने का मश्विरा हुआ। एक ने कहा, ज़िब्ह करना मेरे ज़िम्मे, दूसरे ने कहा, खाल उतारना मेरे ज़िम्मे, तीसरे ने कहा, पकाना मेरे ज़िम्मे। नबी सल्ल० ने कहा, लकड़ी जमा करना मेरे ज़िम्मे। सहाबा रज़ि० ने कहा, हम आपका काम कर देंगे। आपने फ़रमाया, मैं जानता हूं, तुम लोग मेरा काम कर दोगे, लेकिन मैं पसन्द नहीं करता कि तुम पर बरतरी हासिल करूं, क्योंकि अल्लाह अपने बन्दे की यह हरकत नापसन्द करता है कि वह अपने आपको अपने साथियों से बरतर समझें। इसके बाद आपने उठकर लकड़ी जमा फ़रमाई।[2]

आइए, तनिक हिन्द बिन अबी हाला की जुबानी अल्लाह के रसूल सल्ल० के गुण सुनें। हिन्द अपनी एक लम्बी रिवायत में कहते हैं—

अल्लाह के रसूल सल्ल० लगातार ग़मों से दोचार थे। हमेशा सोच-विचार करते रहते थे। आपके लिए आराम न था। बेज़रूरत न बोलते थे, देर तक चुप रहते थे। बात की शुरुआत और अन्त पूरे मुंह से करते थे। यानी सिर्फ़ मुंह के किनारे से न बोलते थे, ठोस और दो टूक बातें करते थे, जिनमें न बेकार की बातें होती थीं, न कोताही। नम्र स्वभाव थे, जफ़ा करने वाले और नाक़दरे न थे। नेमत मामूली भी होती, तो उसका आदर करते। किसी चीज़ की निन्दा नहीं करते थे। खाने की न बुराई करते थे, न तारीफ़, हक़ से कोई छेड़ न होती, तो जब तक बदला न लेते, आपके ग़ुस्से को रोका न जा सकता था, अलबत्ता बड़े दिल के थे। अपने निज के लिए ग़ुस्सा न करते, न बदला लेते। जब इशारा फ़रमाते तो पूरी हथेली से इशारा फ़रमाते और ताज्जुब के वक़्त हथेली पलटते, जब ग़ुस्सा होते तो चेहरा फेर लेते और जब ख़ुश होते तो निगाह पस्त फ़रमा लेते। आपकी ज़्यादातर हंसी मुस्कराहट

---

1. मिश्कात 2/520
2. ख़ुलासतुस्सियर, पृ० 22

के तौर पर थी, मुस्कराते तो दांत ओलों की तरह चमकते।

निरर्थक बातों से ज़ुबान रोके रखते, साथियों को जोड़ते थे, तोड़ते न थे, हर क़ौम के प्रतिष्ठित जनों का आदर करते थे और उसी को उनका वली बनाते थे। लोगों के शर (दुष्टता) से सावधान रहते और उनसे बचाव अख़्तियार करते थे, लेकिन इसके लिए अपनी मुस्कराहट ख़त्म न फ़रमाते थे।

अपने साथियों की ख़बर रखते और लोगों के हालात मालूम करते। अच्छी चीज़ की तारीफ़ करते और बुरी चीज़ की बुराई। बीच का रास्ता अपनाते, अतियों से बचते, ग़ाफ़िल न होते थे कि लोग भी ग़ाफ़िल या दुखी हो जाएं। हर हालत के लिए मुस्तैद रहते थे, हक़ से कोताही न फ़रमाते थे, न नाहक़ की ओर बढ़ते थे। जो लोग आपसे क़रीब रहते, वे सबसे अच्छे लोग थे और उनमें भी आपके नज़दीक श्रेष्ठ वह था जो सबसे बढ़कर हितैषी हो और सबसे ज़्यादा क़द्र आपके नज़दीक उसी की थी जो सबसे अच्छा साथी और सहायक हो।

आप उठते-बैठते अल्लाह का ज़िक्र ज़रूर फ़रमाते थे, जगहें तै न फ़रमाते, यानी अपने लिए कोई अलग से जगह तै न फ़रमाते। जब क़ौम के पास पहुंचते तो मज्लिस में जहां जगह मिल जाती, बैठ जाते और उसी का हुक्म भी फ़रमाते। हर बैठने वाले को उसका हिस्सा देते, यहां तक कि कोई यह न महसूस करता कि कोई व्यक्ति आपके नज़्दीक उससे ज़्यादा इज़्ज़तदार है।

कोई किसी ज़रूरत से आपके पास बैठता या खड़ा होता, तो आप इतने सब्र के साथ उसके लिए रुके रहते कि वही पलटकर वापस होता। कोई किसी ज़रूरत का सवाल कर देता तो उसे दिए बिना या अच्छी बात कहे बिना वापस न फ़रमाते। आपने अपनी मुस्कराहट और चरित्र से सबको नवाज़ा, यहां आप सबके लिए बाप का दर्जा रखते थे और सब आपके नज़दीक एक जैसा हक़ रखते थे। किसी को प्रमुखता थी तो तक़्वे की बुनियाद पर। आपकी मज्लिस इल्म व हया और सब्र व अमानत की मज्लिस थी, इसमें आवाज़ें ऊंची न की जाती थीं और न हुर्मतों का मर्सिया होता था, यानी किसी की आबरू पर आंच आने का डर न था। लोग तक़्वा के साथ आपस में मुहब्बत और हमदर्दी रखते थे। बड़ों का आदर करते थे, छोटों पर दया करते थे। ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी करते थे और अजनबी को मुहब्बत देते थे।

आपके चेहरे पर हमेशा ताज़गी रहती, विनम्र थे, कठोर न थे, न ज़्यादा ज़ोर से बोलते, न गन्दी बात कहते, न ज़्यादा ग़ुस्सा करते, न बहुत तारीफ़ करते थे। जिस चीज़ की ख़्वाहिश होती, उससे ग़फ़लत बरतते थे। आपसे निराशा नहीं होती थी।

आपने तीन बातों से अपने मन को बचाए रखा—

1. दिवावे से,

2. किसी चीज़ के ज़्यादा होने से, और

3. व्यर्थ की बातों से। और तीन बातों से लोगों को बचाए रखा, यानी आप—

1. किसी  की निन्दा नहीं करते थे,

2. किसी को शर्म नहीं दिलाते थे और

3. किसी का ऐब नहीं निकालते थे। आप वही बात ज़ुबान पर लाते थे, जिसमें सवाब की उम्मीद होती।

जब आप बोलते तो आपके पास बैठने वाले अपने सर झुका लेते, मानो उनके सरों पर चिड़िया है और जब आप चुप होते तो लोग बातें करते। लोग आपके पास गपबाजी न करते। आपके पास जो कोई बोलता, सब उसके लिए चुप रहते, यहां तक कि वह अपनी बात पूरी कर लेता। उनकी बात उनके पहले आदमी की बात होती। जिस बात से सब लोग हंसते, उससे आप भी हंसते और जिस बात पर सब लोग ताज्जुब करते उस पर आप भी ताज्जुब करते। अनजान आदमी बाद में जफ़ा से काम लेता तो उस पर आप सब्र करते और फ़रमाते, जब तुम लोग ज़रूरतमंद को देखो कि वह अपनी ज़रूरत की तलब में है, तो उसको ज़रूरत का सामान दे दो। आप एहसान का बदला देनेवालों के सिवा किसी से तारीफ़ न चाहते।[1]

सार यह कि नबी सल्ल० अपूर्व चरित्र वाले व्यक्ति थे। आपके रब ने आपको अनुपम शिष्टाचार दे रखा था, यहां तक कि ख़ुद आपकी तारीफ़ में फ़रमाया—

'यक़ीनन आप उच्च चरित्र वाले हैं।' (68 : 4)

और ये ऐसे गुण थे जिनकी वजह से लोग खिंचकर आपकी ओर आए। दिलों में आपकी मुहब्बत बैठ गई और आपको नेतृत्व का वह पद मिला कि लोग आप पर फ़िदा हो गए। इन्हीं गुणों के कारण आपकी क़ौम की अकड़ और सख़्ती नर्मी में बदल गई, यहां तक कि यह अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो गई।

याद रहे हमने पिछले पन्नों में आपके जिन गुणों का उल्लेख किया है, वह आपके चरित्र और गुणों की श्रेष्ठता की कुछ झलकियां हैं, वरना आपके बड़कपन, बुज़ुर्गी, श्रेष्ठता, महानता का यह हाल था कि उनकी वास्तविकता और तह तक न

---

1. शिफ़ा, क़ाज़ी अयाज़ 1/121-126, साथ ही देखिए शमाइले तिर्मिज़ी

पहुंच संभव है और न उसकी गहराई नापी जा सकती है।

भला इस दुनिया के इस सबसे महान और श्रेष्ठ इंसान की महानता की तह तक किसकी पहुंच हो सकती है, जो बुज़ुर्गी और कमाल की सबसे ऊंची चोटी पर पहुंचा और रब के नूर से इस तरह रोशन हुआ कि अल्लाह की किताब को उसका आदर्श बता दिया गया। यानी—

क़ारी नज़र आता है, हक़ीक़त में है क़ुरआन

**अल्लाहु-म सल्लि अला मुहम्मदिंव- व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब-राही-म व अला आलि इब-राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद० अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिवं-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब-राही-म व अला आलि इब-राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०**

— **सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी**

हुसैनाबाद, मुबारकपुर

ज़िला आज़गढ़ (उ०प्र०) भारत

16 रमज़ानुल मुबारक 1404 हि० तद०

17 जून 1984 ई०

# किताबें

## (जिनके हवाले दिए गए)

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | इत्तिहाफ़ुल वरा बिअख़बारि उम्मिल कुरा | उमर बिन मुहम्मद –इब्ने फ़ह्द मक्की | 885 हि० | | |
| 2. | सहीह इब्ने हिब्बान | अबू हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान | 354 हि. | दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत | |
| 3. | अख़बारुल किराम बि अख़बारिल मस्जिदिल हराम | अहमद बिन मुहम्मद असदी मक्की | 1066 हि. | अल-मतबअतुस्सल-फ़ीया, बनारस | 1396 हि. |
| 4. | अल अ-द-बुल मुफ़रद | मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी | 256 हि. | स्तम्बोल | 1304 हि. |
| 5. | अल-इस्तीआब | अबू उमर यूसुफ़ बिन अबुल बर्र | 463 हि. | मत्बअतुनबजा, मिस्र | |
| 6. | उसदुल ग़ाबा | अज़्ज़ुद्दीन बिन असीर जौज़ी | 630 हि. | दारुल फ़िक्र | |
| 7. | अल-इसाबा फ़ी तमयी ज़िस्सहाबा | हाफ़िज़ इब्ने हजर | 853 हि. | दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत | |
| 8. | अल-अस्नाम | हिशाम बिन मुहम्मद अल-कलबी | 204 हि० | दारुल कुतुब मिस्रीया, क़ाहिरा | |
| 9. | अनसाबुल अशराफ़ | अहमद बिन यह्या बलाज़री | 279 हि० | दारुल मआरिफ़ | |
| 10. | अल-बिदाया वन्निहाया | इस्माईल बिन उमर बिन कसीर | 774 हि० | मक्तबतुल मआरिफ़, बैरूत | |
| 11. | तारीख़ अरज़ुल कुरआन | सैयद सुलैमान नदवी | 1373 हि. | मआरिफ़ प्रेस, आज़मगढ़ | 1955 ई. |

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 12. | तारीख़ुल उमम वल मुलूक | मुहम्मद बिन अबू जाफ़र इब्ने जरीर तबरी | ५२१ हि. | दारुल मआरिफ़, क़ाहिरा | |
| 13. | तारीख़ इब्ने ख़ल्लदून | अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद ख़ल्लदून | 808 हि. | बोलाक़, मिस्र | |
| 14. | अत्तारीख़ुस्सग़ीर | मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी | 356 हि. | दारुत्तुरास, क़ाहिरा | 1397 हि. |
| 15. | तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब | अबुल फ़र्ज अब्दुर्रहमान बिन जौज़ी | 597 हि. | अत्तौफ़ीकुल अदबीया, मिस्र | |
| 16. | तारीख़ अल याक़ूबी | अहमद बिन अबी याक़ूब बिन जाफ़र | 292 हि. | दारे सादिर, बैरूत | 1379 हि. |
| 17. | तोहफ़तुल अह्वज़ी, शरहजामे तिर्मिज़ी | अबुल अली अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी | 1353 हि/ 1935 ई. | जैयद बर्क़ी प्रेस, दिल्ली, | 1346 हि/ 1353 हि. |
| 18. | तफ़्सीर तबरी | अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर तबरी | 310 हि. | दारुल फ़िक्र, बैरूत | |
| 19. | तफ़्सीर क़ुर्तबी | अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद क़ुर्तबी | 671 हि. | दारुल कुतुब मिस्रीया | |
| 20. | तफ़्सीर इब्ने कसीर | इस्माईल बिन उमर बिन कसीर | 774 हि. | रियाज़ | 1313 हि/ 1992 ई॰ |
| 21. | तलक़ीह फ़हूम अह्लुल असर | अबुल फ़र्ज अब्दुर्रहमान इब्नुल जौज़ी | 597 हि. | जैयद बर्क़ी प्रेस, दिल्ली | |
| 22. | तह्ज़ीबे तारीख़े दमिश्क़ | इब्ने असाकिर | 571 हि. | रशीदिया, दिल्ली | |
| 23. | जामे तिर्मिज़ी | अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी | 279 हि. | त॰ अहमद शाकिर, मिस्र | |
| 24. | जमहरतु अन्साबिल अरब | इब्ने हज़्म अली बिन अहमद उन्दुलुसी | 456 हि. | ताबेअ दारुल कुतुबिल इल्मीया, बैरूत | |

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 25. | जमहरतुन्नसब | हिशाम बिन मुहम्मद अल-कलबी | 204 हि. | आलमुल कुतुब, बैरूत | |
| 26. | ख़ुलासतुस्सियर | मुहिब्बुद्दीन अहमद बिन अब्दुल्लाह तबरी | 674 हि. | दिल्ली प्रिंटिंस प्रेस | 1343 हि. |
| 27. | दरासातु फ़ी तारीख़िल अरब | सैयद अब्दुल अज़ीज़ सालिम | | स्कन्दरिया | |
| 28. | अद-दुर्रुल मंसूर | जलालुद्दीन सुयूती | 911 हि. | दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत | 1411 हि. |
| 29. | दलाइलुन्नुबूवः | अहमद बिन हुसैन बैहक़ी | 458 हि. | दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत | |
| 30. | दलाइलुन्नुबूवः | अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्बहानी | 430 हि. | दारुन्नफ़ाइस, बैरूत | |
| 31. | दलाइलुन्नुबूवः | इस्माईल बिन मुहम्मद अस्बहानी | 535 हि० | दारुतैयिबा, रियाज़ | |
| 32. | रहमतुल्लि आलमीन | क़ाज़ी सुलैमान, सलमान मंसूरपुरी | 1930 ई० | देवबन्द, दिल्ली | |
| 33. | रसूले अक्रम की सियासी ज़िंदगी | डा० मुहम्मद हमीदुल्लाह | | सालिम कम्पनी, देवबन्द | 1963 ई. |
| 34. | अर-रौज़ुल अन्फ़ | अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह सुहैली, | 581 हि. | जमालिया, मिस्र, | 1332 हि. |
| 35. | ज़ादुल मआद | इब्ने क़य्यिम, मुहम्मद बिन बक्र | 751 हि. | मतबआ मिस्रीया | 1347 हि. |
| 36. | सबाइकुज़्ज़हब | मुहम्मद अमीन बिल अली सुवैदी | 1346 हि. | | पहला एडीशन |
| 37. | सफ़रुत्तक्वीन (पैदाइश) | बाइबिल का एक हिस्सा | | | |
| 38. | सुनन अबी दाऊद | सुलैमान बिन अशअस सजस्तानी | 275 हि. | मजीदी, कानपुर | |

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 39. | अस्सुननुल कुबरा | अहमद बिन हुसैन बैहक़ी | 458 हि. | दारुल मारफ़ा, बैरूत | |
| 40. | सुनन इब्ने माजा | मुहम्मद बिन यज़ीद इब्ने माजा | 273 हि. | | |
| 41. | सुनन मुज्तबा | अहमद बिन शुऐब नसई | 303 हि. | मक्तबा सलफ़ी, लाहौर | |
| 42. | अस्सीरतुल हलबीया | अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी | 1044 हि. | तबअ, बैरूत | |
| 43. | अस्सीरतुल नबवीया | अबू हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान | 354 हि. | तबअ, बैरूत | पहला एडीशन |
| 44. | अस्सीरतुल नबवीया | अब्दुल मलिक बिन हिशाम | 213/ 218 हि. | मिस्र | 1375 हि. |
| 45. | शरहुलि मवाहिबुल्लदुनिया | मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी | 1122 हि. | दारुल मारफ़ा, बैरूत | |
| 46. | शरहुस्सुन्नः | हुसैन बिन मसऊद बग़ली | 516 हि. | मक्तब इस्लामी, बैरूत | पहला एडीशन |
| 47. | शरह सहीह मुस्लिम | यह्या बिन शरफ़ नववी | 576 हि. | | 1376 हि. |
| 48. | अश-शिफ़ा | क़ाज़ी अयाज़ बिन मूसा | 544 हि. | उस्मानिया, स्तंबोल | 1312 हि. |
| 49. | शमाइले तिर्मिज़ी | मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी | 279 हि. | दिल्ली एडीशन | |
| 50. | सहीह बुख़ारी | मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी | 256 हि. | दिल्ली एडीशन | 1387 हि. |
| 51. | सहीह मुस्लिम | मुस्लिम बिन हज्जाज कुसैरी | 261 हि. | दिल्ली एडीशन, | 1376 हि. |
| 52. | सहीफ़ा हबकूक़ | बाइबिल का एक हिस्सा | | | |

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 53. | अत-तबक़ातुल कुबरा | मुहम्मद बिन साद | 230 हि. | दारे सादिर, बैरूत | |
| 54. | अल-अक़्दुल फ़रीद | अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उन्दुलसी | 338 हि. | लजनतुत्तालीफ़ | 1263 हि. |
| 55. | औनुल माबूद शरह सुनने अबी दाऊद | शम्सुल हक़ अज़ीमाबादी | 1329 हि. | हिन्दुस्तानी एडीशन | |
| 56. | फ़त्हुल बारी | हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी | 852 हि. | मतबआ सलफ़िया, मिस्र | पहला एडीशन |
| 57. | फ़त्हुल क़दीर | मुहम्मद बिन अली शौकानी | 1250 हि. | मुस्तफ़ा अली हलबी | दूसरा एडीशन |
| 58. | क़लाइदुज्ज़मान | अहमद बिन अली | 821 हि. | अस्सआदतु मिस्र | पहला एडीशन |
| 59. | क़ल्ब जज़ीरतुल अरब | फ़ुवाद बिन अमीन हमज़ा | 1370 हि/ 1957 ई. | अस्सलफ़ीया, मिस्र | 1352 हि. |
| 60. | अल-कामिल फ़ित्तारीख़ | अज़्ज़ुद्दीन इब्नुल असीर अल जौज़ी | 563 हि. | दारुल कुतुबुल-इल्मीया, बैरूत | |
| 61. | कंज़ुल उम्माल | अलाउद्दीन अली मुत्तक़ी बुरहानपुरी | 975 हि. | अर-रिसाला, बैरूत | पांचवां एडीशन |
| 62. | अल-लिसान | इब्ने मंज़ूर, मुहम्मद बिन मुकर्रम | 711 हि. | दारुल मुआरिफ़, क़ाहिरा | |
| 63. | मजमउज़ ज़वाइद | नूरुद्दीन अली बिन अबी बक्र हैसमी | 807 हि. | दारुल मुआरिफ़, बैरूत | 1406 हि. |
| 64. | मुहाज़रात तारीख़ुल आलमिल इस्लामी | ख़ुज़री बक | 1345 हि. | | |
| 65. | मुख़्तसर सीरतुर्रसूल | अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अब्दुल वह्हाब नजदी | 1242 हि. | अस्सलफ़ीया, मिस्र | 1379 हि. |
| 66. | मदारकुत्तंज़ील | अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी | 701 हि. | मिस्र | |

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 67. | मुरव्वजुज़्ज़हब | अली बिन हुसैन मसअदी | 346 हि. | बैरूत | |
| 68. | अल-मुस्तदरक अलस्सहीहैन | हाकिम नीसापुरी, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह | 405 हि. | अस्सलफ़ीया, बैरूत | |
| 69. | मुस्नद इमाम अहमद | अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल शैवानी | 291 हि. | | |
| 70. | मुस्नद बज़्ज़ार | अहमद बिन अम्र बज़्ज़ार | 292 हि. | | |
| 71. | मुस्नद ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात | ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात अस्फ़री | 240 हि. | | |
| 72. | मुस्नद दारमी | अब्दुर्रहमान बिन फ़ज़्ल दारमी | 255 हि. | | |
| 73. | मुस्नद अबी दाऊद तयालसी | सुलैमान बिन दाऊद तयालसी | 204 हि. | दारुल मारफ़ा, बैरूत | |
| 74. | मुस्नद अबी याला | अबू याला अहमद बिन अली तमीमी | 307 हि. | दारुल मामून, दमिश्क़, | पहला एडीशन |
| 75. | मिश्कातुल मसाबीह | मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह तबरेज़ी | | हिन्दुस्तानी एडीशन | |
| 76. | मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा | मुहम्मद बिन अबी शैबा ईसा | 235 हि. | सलफ़ीया, बम्बई | पहला एडीशन |
| 77. | मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक | अब्दुर्रज़्ज़ाक बिन हमाम सनआनी | 211 हि. | कराची एडीशन | |
| 78. | अल-मआरिफ़ | इब्ने कुतैबा, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम | 276 हि. | दारुल मआरिफ़, क़ाहिरा | चौथा एडीशन |
| 79. | अल-मोजमुल औसत | सुलैमान बिन अहमद तबरानी | 360 हि. | अल-मआरिफ़, रियाज़ | |
| 80. | अल-मोजमुल सग़ीर | | 360 हि. | दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत | 1403 हि. |

| क्र.स. | किताब का नाम | लेखक | मृत्यु | प्रकाशक | सन् |
|---|---|---|---|---|---|
| 81. | मोजमुल बुलदान | याक़ूत बिन अब्दुल्लाह हिमयरी | 626 हि. | बैरूत | |
| 82. | मग़ाज़ी अल-वाक़दी | मुहम्मद बिन उमर बिन वाक़िद, वाक़दी | 207 हि. | आलमुल कुतुब, बैरूत | 1404 हि. |
| 83. | अल-मुनमिक़ फ़ी अख़बारे क़ुरैश | मुहम्मद बिन हबीब बग़दादी | 245 हि. | आलमुल कुतुब, बैरूत | पहला एडीशन |
| 84. | अल-मुवाहिबुल लुदनीया | अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी | 923 हि. | बैरूत | |
| 85. | मुअत्ता इमाम मालिक | मालिक बिन अनस अस्बही | 169 हि. | हिन्दुस्तानी एडीशन | |
| 86. | नताइजुल इफ़हाम | महमूद अहमद हम्दी पाशा फ़लकी | 1302 हि./ 1885 ई. | बैरूत | 1407 हि./ 1986 ई. |
| 87. | नस्ब क़ुरैश | मुसअब बिन अब्दुल्लाह ज़ुबैरी | 236 हि. | दारुल मआरिफ़, मिस्र | तीसरा एडीशन |
| 88. | नस्ब मुअद्द अल-यमनुल कबीर | हिशाम बिन मुहम्मद कलबी | 204 हि. | मक्तबा अल-नह-ज़तुल अरबीया | |
| 89 | निहायतुल अदब | अहमद बिन अली | 821 हि. | मिस्र | 1959 ई. |
| 90. | वफ़ाउल वफ़ा | अली बिन अहमद | 911 हि. | बैरूत | |
| 91. | अल-यमन इबरुत्तारीख़ | अहमद हुसैन शरफ़ुद्दीन | | रियाज़ | 1400 हि./ 1980 ई. |